①

बिपिन चंद्र

CHAPTER-11

(कांग्रेस विभाजन तथा क्रांतिकारी आतंकवाद का उदय)

* 1907 में कांग्रेस विभाजित हुई व बंगाल में क्रांतिकारी आतंकवाद का उदय हुआ।
* 1907 तक नरमपंथी राष्ट्रवादियों की ऐतिहासिक भूमिका समाप्त हो गई।
* नरमपंथी आंदोलन की आम जनता में न आस्था थी ना ही पहुँच, यह कारण था कि स्वदेशी आंदोलन व बहिष्कार आंदोलन का नेतृत्व इनके हाथ में नहीं था। (↳ अपवाद बंगाल)
* इनका विश्वास था कि वे हुकूमत पर दबाव डालकर राजनीतिक व आर्थिक सुधार लागू करवा लेंगे।
* नरमपंथी आंदोलनकारियों की असफलता का मुख्य कारण था कि राजनीतिक घटनाक्रमों के अनुरूप वे अपनी रणनीति में आवश्यक बदलाव नहीं ला पाए। वे युवा पीढ़ी को अपने साथ नहीं ले सके।
* शुरू में कांग्रेस के प्रति अंग्रेजों का रवैया नरम था पर जैसे ही कांग्रेस का दायरा बढ़ा वे इसके आलोचक हो गए।
* राष्ट्रवादियों को 'गद्दार', 'ब्राह्मण', 'आहिंसक खलनायक' और कांग्रेस को 'राजद्रोह का कारखाना' बताया गया।
* "ये कुर्सी न पाने से विक्षुब्ध कुछ लोग तथा कुछ असंतुष्ट वकील हैं, जो अपने सिवा किसी और का प्रतिनिधित्व नहीं करते।" — अंग्रेजों के बारे में

वाइसराय डफरिन → कांग्रेस मुट्ठी भर संभ्रांत लोगों का नेतृत्व कर रही है।

(1887 में सार्वजनिक सभा में) जॉर्ज हैमिल्टन (गृह सचिव) → कांग्रेस को राजद्रोही व दोहरे चरित्र वाला कहा।

* इसी समय लड़ाकू अथवा गरमपंथी विचारधारा पनपने लगी व कांग्रेस नेता अपने को इस विचारधारा से अलग रखने लगे।

(वाइसराय) लार्ड कर्जन (1905) → "गोखले या तो यह समझ नहीं रहे हैं कि वह जा कहाँ रहे हैं और अगर उन्हें मालूम है, तो वह बेईमान है। भारत में राष्ट्रीय चेतना जगाने की अपील और साथ ही ब्रिटिश सत्ता के प्रति वफादारी, दोनों काम आप एक साथ नहीं कर सकते।"

(दादाभाई नैरोजी के बारे में) जार्ज हैमिल्टन (1900) → "आप अपने को अंग्रेजी हुकूमत का समर्थक बताते हो, लेकिन जो कदम अंग्रेजी हुकूमत को बरकरार रखने के लिए उठाए जाते हैं और उसके जो नतीजे निकलते हैं, उनकी आप आलोचना करते हैं।"

कर्जन की नीति — नरमपंथीयों के नेतृत्व में कांग्रेस काफी कमजोर है, अतः ऐसे मौके पर इसे खत्म किया जा सकता है | - जार्ज हैमिल्टन ने समर्थन किया

कर्जन (1900) → कांग्रेस अब लड़खड़ा रही है और जल्द ही गिरनेवाली है | मेरा सबसे बड़ा मकसद भी यही है कि मेरे भारत प्रवास के दौरान ही इस पार्टी का अंत हो जाए |

कर्जन (1903) → जब से मैं भारत आया हूँ, मेरी नीति यही रही है कि किसी भी तरह कांग्रेस को नपुंसक बना दूँ |

* 1904 में कर्जन ने कांग्रेस अध्यक्ष के नेतृत्व में कांग्रेसी प्रतिनिधिमंडल से मिलने से इंकार कर दिया |

* स्वदेशी व बहिष्कार के समय अंग्रेजो की नीति थी — दमन, समझौता व उन्मूलन (जॉन मार्ले द्वारा बनाई)
गरमपंथीयों का दमन, नरमपंथियों को कुछ रियायत देकर समझौता कर गरमपंथीयों से अलग करना, फिर दोनो को खत्म करना |

* कांग्रेसियों को फँसाने के लिए 1906 में 'लेजिस्लेटिव काउंसिल' में सुधारो पर कांग्रेस के नरमपंथी नेतृत्व से ~~अध्य~~ बातचीत शुरू की |

* गरमपंथी व नरमपंथी को अलग करने की कोशिश बाद में भी जारी रही |

* नरमपंथी बहिष्कार आंदोलन को बंगाल तक सीमित कर केवल विदेशी माल का बहिष्कार करना चाहते थे, परंतु गरमपंथी देशव्यापी असहयोग चाहते थे व अंग्रेजी हुकूमत को किसी भी तरह के सहयोग के खिलाफ थे |

* 1906 कलकत्ता में अध्यक्ष को लेकर विभाजन की नौबत आ गई परंतु दादाभाई नौरोजी के अध्यक्ष बनने पर विभाजन टल गई |

* स्वदेशी आंदोलन, बहिष्कार आंदोलन, राष्ट्रीय शिक्षा और स्वशासन से संबद्ध प्रस्ताव पारित हुए, जिसे दोनो दलो ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया और विभाजन के लिए कमर कसने लगे |

* नरमपंथी दल के नेता फीरोजशाह मेहता व गरमपंथी दल के नेता ~~अर~~ अरविंद घोष थे |

गोखले (1907) → आप सत्ता की ताकत को महसूस नहीं करते | यदि कांग्रेस आपके सुझावो पर चलेगी, तो सरकार को इसे खत्म करने में पाँच मिनट भी नहीं लगेंगे | (गरमपंथियों को)

* नरमपंथीयों का प्रशासन में हिस्सेदारी का सपना पूरा होने जा रहा था और उन्हें लगा गरमपंथियों से दोस्ती मँहगी पड़ेगी |

* नरमपंथी और गरमपंथी दोनों के सोच व अनुमान गलत थे, पारस्परिक मतभेद के दृष्टिकोण से भी और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से भी |

* तिलक (गरमपंथी) और गोखले (नरमपंथी) राष्ट्रवादियों में फूट के खतरे को अच्छी तरह समझते थे। दोनो ने विभाजन को टालने का प्रयास किया व असफल रहे।

एक मित्र को लिखा ← गोखले (1907) → "विभाजन का मतलब विनाश होगा और नौकरशाही के लिए दोनो को दबाने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होगी।"

* 26 Dec 1907 को ताप्ती नदी के किनारे सूरत अधिवेशन हुआ।
* अफवाह थी नरमपंथी कलकत्ता अधिवेशन के चारो प्रस्तावो को निष्प्रभावी बनाना चाहते है, गरमपंथी चारो प्रस्ताव के स्वीकार की गारंटी चाहते थे।
* किसी अज्ञात व्यक्ति ने मंच पर जूता फेंका, जो फीरोजशाह मेहता व सुरेंद्रनाथ बनर्जी को लगा। पुलिस आई और सभागार खाली करा दिया गया।

मॉरले को लिखा ← मिंटो → "सूरत में कांग्रेस का पतन हमारी बहुत बड़ी जीत है।"

* तिलक ने इस दरार को पाटने की बहुत कोशिश की पर फीरोजशाह मेहता नहीं माने
* इस घटना के बाद आतंकवादियों का दमन किया गया।
* तिलक को 6 वर्ष की जेल हुई (मांडले जेल), अरविंद घोष राजनीति को त्याग पांडिचेरी चले गए, बिपिनचंद्र पाल ने अस्थायी संन्यास ले लिया, लाला लाजपत राय 1908 में ब्रिटेन चले गए।
* नरमपंथियो के लिए मैदान साफ था, गरमपंथियो के एकता के सभी प्रस्तावो को रद्दी में डाल उन्हे पार्टी से बाहर कर दिया गया।
* कांग्रेस के पुनर्निर्माण की बात सोची - "पुनर्जीवित, नए रूप में सजी-संवरी कांग्रेस" — फीरोजशाह मेहता
* कांग्रेस की शक्ति समाप्तप्राय हो चुकी थी।
* केवल गोखले 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' के सहयोगी के साथ डटे रहे।

जेल से बाहर आने पर ← अरविंद घोष (1909) → "जब मैं जेल जा रहा था, तो समूचा देश एक नए राष्ट्र की परिकल्पना संजोए जीवंत दिख रहा था, लाखो सुप्त दिलों में नई राजनीतिक चेतना हिलोरें लेने लगी थी, लेकिन जब मैं जेल से बाहर आया तो पूरा देश स्तब्ध मौन था।"

* 1914 में जेल से छूटने पर तिलक ने आंदोलन शुरू किया।

मॉरले - मिंटो सुधार →

* 'इंडियन काउंसिल ऐक्ट 1909' के तहत 'इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल' और 'प्रोविंशियल काउंसिल' में निर्वाचित प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ाई गई।
* अधिसंख्य प्रतिनिधियों का चुनाव अप्रत्यक्ष रूप से ही होना था
* गवर्नर जनरल की 'एग्जिक्यूटिव काउंसिल' में एक भारतीय की नियुक्ति का प्रावधान था।

* 'इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल' में 36 सरकारी और 5 गैर सरकारी व 27 निर्वाचित (6 का चुनाव बड़े जमींदार 2 का अंग्रेजी पूँजीपति) – कुल 68 प्रतिनिधि
* प्रस्ताव रखने और सवाल करने का अधिकार दिया, पर व्यवहारिक रूप से नहीं।

पार्लियामेंट में घोषणा — मॉरले → "अगर कुछ लोग यह समझते हैं कि नए सुधारों के चलते प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हिन्दुस्तान में संसदीय लोकतंत्र की स्थापना हो जाएगी, तो वे गलतफहमी में हैं।"

* निर्वाचन क्षेत्रों को धार्मिक आधार पर बाँट कर फूट डालने की कोशिश की गई।
* मुसलमानों के लिए सुरक्षित सीटें बनाई गईं।
* 1907 की समाप्ति तक नरमपंथी राजनीति मौत के कगार पर थी और 19वीं सदी के समाप्ति के साथ नरमपंथी से युवाओं का मोह भंग हो चुका था।
* विक्षुब्ध बंगाल के युवकों ने व्यक्तिगत वीरता और क्रांतिकारी आतंकवाद की राह पकड़ ली।
* 'बम की राजनीति' के लिए गरमपंथी भी जिम्मेदार थे, जनता को सही नेतृत्व नहीं दे सके।

बारीसाल सम्मेलन में लाठीचार्ज के बाद — 'युगांतर' (April 1906) → अंग्रेजी हुकूमत के दमन को रोकने के लिए भारत की 30 करोड़ जनता अपने 60 करोड़ हाथ उठाए। ताकत का मुकाबला ताकत से किया जाएगा।

युवकों ने आयरलैंड राष्ट्रवादियों और रूसी निहिलिस्टों (विनाशवादियों) व पापुलिस्टों के तौर के तरीकों को अपनाया।

* बदनाम अंग्रेजी अफसरों की हत्या की योजना बनी।
* वी० डी० सावरकर (1904) ने 'अभिनव भारत' क्रांतिकारियों का गुप्त संगठन बनाया।
* 1907 में बंगाल में लेफ्टिनेंट गवर्नर की हत्या का असफल प्रयास किया गया।
* खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी (April 1908) ने मुजफ्फरपुर के जज किंग्सफोर्ड की बग्घी पर बम फेंका पर दो अंग्रेज महिलाएं मारी गईं।
* चाकी ने खुद को गोली मार ली व खुदीराम बोस को फाँसी दे दी गई।
* ज्यादा दिन चलने वाले संगठन — 'अनुशीलन समिति' और 'युगांतर' क्रांतिकारियों के गुप्त संगठन थे। इनकी गतिविधियाँ दो थी — (1) अत्याचारी अफसरों, मुखबिरों और देशद्रोहियों की हत्या (2) डाका डाल पैसे इकट्ठे करना – हथियार खरीदने के लिए
* रासबिहारी बोस और सचिन सान्याल के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने वाइसराय लार्ड हार्डिंग की हत्या का असफल प्रयास किया।
* लंदन में मदनलाल धींगरा ने कर्जन वाइली की हत्या की।
* लंदन में श्यामजी कृष्ण वर्मा, वी० डी० सावरकर और हरदयाल व यूरोप में मैडम कामा और अजीत सिंह ने क्रांतिकारी आतंकवादियों के केन्द्र स्थापित किए।
* क्रांतिकारी आतंकवादी अवधारणा को सबसे अधिक प्रोत्साहन अरविंद घोष ने दिया।
* क्रांतिकारी आतंकवाद धीरे-धीरे समाप्त हो गया।

(1)

बिपिन चंद्र

CHAPTER – 12

(प्रथम विश्वयुद्ध और भारतीय राष्ट्रवाद : गदर आंदोलन)

* 1914 में जब प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ा उस समय यह धारणा थी कि ब्रिटेन पर चोट भारत के हित में है।
* उत्तरी अमरीका में गदर क्रांतिकारियों और भारत में तिलक तथा एनी बेसेंट ने इस मौके का लाभ उठाया।
* गदर क्रांतिकारियों ने सशस्त्र संघर्ष व स्वदेशी संगठनों ने आंदोलन छेड़ा
* उ० अमरीका का प० सागर तट पर 1904 के बाद से पंजाबी अप्रवासी बसने लगे।
* गाँव से आए लोगों में से ज्यादातर को कनाडा व अमरीका में घुसने नहीं दिया
* जिन्हें बसने की इजाजत मिली उनके साथ अत्याचार हुआ और राजनीतिक नेताओं ने भी इनका साथ नहीं दिया।
* भारतीय गृह सचिव ने भारतीयों के विदेश में बसने पर प्रतिबंध लगाने की माँग की ताकी भारतीय समाजवादी विचारधारा से प्रभावित न हो सके।
* 1908 में कनाडा में भारतीयों के घुसने पर प्रतिबंध लगा।
* रामनाथ पुरी ने 'सरकुलर-ए-आजादी' और स्वदेशी आंदोलन का समर्थन किया।
* तारकनाथ दास ने वैंकूवर में 'फ्री हिन्दुस्तान' शुरू किया।
* जी० डी० कुमार ने वैंकोवर में सिख 'स्वदेश सेवकगृह' की स्थापना की और गुरुमुखी में 'स्वदेश सेवक' अखबार निकाला।
* सामाजिक सुधार की आवाज उठाई गई और 1910 में सेना को विद्रोह करने को कहा
* तारकनाथ दास और जी० डी० कुमार ने अमरीका के 'सिएटल' में 'यूनाइटेड इंडिया हाउस' की स्थापना की जिसका संपर्क खालसा दीवान सोसायटी से हुआ।
* 1913 में दोनों संगठनों ने लंदन में ब्रिटेन के सचिव तथा भारत में वाइसराय से बात करने प्रतिनिधिमंडल भेजा। नहीं मिले
* आम जनता तथा प्रेस का भारी समर्थन मिला।
* भारतीयों के खिलाफ विदेश के कड़े कानूनों को बदलवाने के लिए भारतीय व ब्रिटिश सरकार से मदद लेनी चाही पर सफल नहीं हुए। (प्रतिनिधि मंडल ने)
* सिख ग्रंथी भगवान सिंह ने 1913 में वैंकोवर में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ हथियार उठाने का आह्वान किया एवं 'वंदेमातरम' को क्रांतिकारी सलाम मानने की बात (कनाडा सरकार ने 3 महीने बाद निकाल दिया)
* अमरीका राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बना।
* सबसे महत्वपूर्ण भूमिका ~~[illegible]~~ लाला हरदयाल ने निभाई।
* उन्होंने एक परचा 'युगांतर' जारी कर हार्डिंग पर हमले को उचित ठहराया। (हरदयाल)
* लाला हरदयाल पश्चिमी अमरीकी तट पर बसे भारतीयों के नेता बन गए।
* मई 1913 में पोर्टलैंड में 'हिंदी एसोसिएशन' का गठन हुआ। पहली बैठक काशीराम के घर पर हुई। काशीराम का ← परमानंद, सोहनसिंह भाकना भाई हरनाम सिंह 'टुंडिलाट' ने भाग लिया

②

हिंदी एसोसिएशन के प्रथम बैठक में ← लाला हरदयाल → "अमरीकियों से मत लड़िए, यहां जो आजादी आपको मिली है, उसका इस्तेमाल अंग्रेजों से लड़ने में कीजिए। जब तक आप अपने देश में आज़ाद नहीं हो जाते, आपके साथ अमरीकियों के समान व्यवहार नहीं किया जाएगा।"

* लाला हरदयाल की बात मान एक समिति का गठन किया गया और एक साप्ताहिक अखबार 'गदर' निकालने और नि:शुल्क बाँटने का निर्णय लिया गया।
* सैनफ्रांसिस्को में 'युगांतर आश्रम' मुख्यालय खोलने व पोर्टलैंड की पहली बैठक के निर्णयों को मंजूरी देने को बैठक आयोजित की गई।
* अंत में इन बैठकों के प्रतिनिधि ऐसटोरिया में मिले व पोर्टलैंड में किए गए निर्णय को मंजूरी दी। इस प्रकार गदर आंदोलन शुरू हो गया।
* आंदोलन कारियों ने प्रचार कार्य किए, खेतों व कारखानों में आप्रवासी भारतीयों से संपर्क किया गया।
* युगांतर आश्रम राजनीतिक कार्यकर्ताओं का मुख्यालय, उनका घर और शरणस्थली बना।
* 1 Nov 1913 को 'गदर' का पहला अंक उर्दू में प्रकाशित हुआ।
  9 Dec से गुरुमुखी में भी
* गदर ← अखबार के साथ एक पंक्ति 'अंग्रेजी राज का दुश्मन' लिखा रहता। अंक के पहले पृष्ठ पर छपता — "अंग्रेजी राज का कच्चा चिट्ठा"
  14 सूत्रीय कच्चा चिट्ठा, जो अंग्रेजी कुशासन का उदाहरण देता था
* आखिरी दो सूत्र इन समस्याओं का समाधान बताते थे — पहला भारतीयों की आबादी अंग्रेजों से कहीं ज्यादा है और दूसरा, 1857 के विद्रोह को 56 वर्ष बीत चुके हैं, अब दूसरे विद्रोह का वक्त आ गया है।
* 'अनुशीलन समिति' 'युगांतर' और रूस के गुप्त संगठनों से प्रशंसनीय व साहसिक कार्यों की जानकारी दी जाती थी।
* जनता पर 'गदर' में छपी कविताओं का अधिक प्रभाव पड़ा।
* 'गदर की गूँज' नाम से इन कविताओं का संकलन प्रकाशित हुआ।
* पंजाबी आप्रवासियों को गदर आंदोलन ने कम समय में अपना समर्थक बनाया
* ये अंग्रेजी हुकूमत के वफादार सैनिक नहीं रहे इनका लक्ष्य ~~अंग्रेजी~~ 'हिन्दुस्तान से अंग्रेजी हुकूमत को उखाड़ फेंकना हो गया।'
* गदर आंदोलन की भावी रणनीति को तीन घटनाओं ने बहुत प्रभावित किया — हरदयाल की गिरफ्तारी, कामागाटामारू कांड व प्रथम विश्वयुद्ध
* हरदयाल पर अराजकता का आरोप लगा 25 March, 1914 को गिरफ्तार कर लिया गया। छूटने पर वे देश से बाहर चुपके से चले गए
* गदर आंदोलन को उनका सहयोग अचानक खत्म हो गया।

कामागाटामारू प्रकरण :—

* 1914 में कामागाटामारू प्रकरण हुआ।
* कनाडा सरकार ने भारतीयों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया केवल भारत से सीधे कनाडा जाने वालों को अनुमति थी
* Nov, 1913 में कनाडा सुप्रीम कोर्ट ने 35 भारतीयों को जो सीधे नहीं आये थे कनाडा में प्रवेश की अनुमति दी।
* उत्साहित होकर सिंगापुर के ठेकेदार गुरदीत सिंह ने कामागाटामारू जहाज किराए पर लेकर दक्षिण व पूर्व एशिया के 376 भारतीयों को ले वैंकोवर को चले।
* याकोहामा (जापान) में गदर क्रांतिकारी इनसे मिले।
* इसी बीच कनाडा के कानून में संशोधन किया गया जिस करण 35 ने आदेश दिए थे।
* वैंकोवर से दूर जहाज को रोक दिया गया, तो हुसैन रहीम, सोहनलाल पाठक और बलवंत सिंह के नेतृत्व में 'शोर कमेटी' गठित की गई, विरोध में बैठके हुई।
* कनाडा सरकार पर असर नहीं हुआ कामागाटामारू को कनाडा की जल-सीमा से बाहर कर दिया गया, याकोहामा पहुँचने के पहले प्रथम विश्व युद्ध छिड़ गया। (पंजाब प्रेस ने चेतावनी दी थी)
* भारत सरकार ने जहाज को सीधे कलकत्ता जाने का आदेश दिया।
* कलकत्ता के पास बजबज पहुचने पर यात्रियों ने पुलिस से संघर्ष किया।
* 18 यात्री मर गए, 202 जेल गए और कुछ भागने में सफल रहे।
* तीसरी घटना जिसने गदर आंदोलन को हवा दी प्रथम विश्व युद्ध थी।
* आंदोलनकारी इसे हाथ से जाने नहीं देना चाहते थे।
* बैठक बुलाई गई और गदर पार्टी ने 'ऐलान-ए-जंग' युद्ध की घोषणा की हिन्दुस्तान आकर सैनिकों की मदद लेने का फैसला किया गया। - हथियार के लिए
* प्रवासी भारतीय को भारत भेजने की कोशिश की।
* करतार सिंह सराभा व रघुवीर दयाल गुप्त पहले ही भारत आ गए। (गदर षड्यंत्र में फाँसी दी गई)
* भारत आने पर पूरी जाँच पड़ताल की जाती कुछ को गिरफ्तार भी किया गया 8000 प्रवासी भारत लौटे। श्रीलंका व द० भारत से आनेवाले पंजाब पहुँच गए।
* पर पंजाबी गदर क्रांतिकारी का साथ देने को तैयार नहीं थे।
* खालसा दीवान ने क्रांतिकारियों को पतित व अपराधी सिख घोषित किया।
* शचींद्रनाथ सान्याल और विष्णु पिंगले ने रासबिहारी बोस को आंदोलन का नेतृत्व करने को मनाया।
* जनवरी 1915 में रासबिहारी बोस पंजाब पहुँचे।
* बोस ने एक संगठन का प्रारूप तैयार कर लोगो को सैनिक छावनियों से संपर्क करने भेजा और 11 Feb को रिपोर्ट देने को कहा, विद्रोह की 21 Feb निश्चित की गई। (बाद में 19 Feb की गई)
* CID को जानकारी मिल गई और सारे नेता गिरफ्तार कर लिए गए। बोस बच कर निकल गए।
* पंजाब और मंडालय में चले षड्यंत्र के मुकदमों में 42 क्रांतिकारियों को फाँसी दी गई 200 को लंबी सजा।

(4)

गदर क्रांतिकारी रामचंद्र से सम्पर्क था

* बर्लिन के भारतीय, जर्मनी की मदद से विदेश में भारतीय सैनिक को विद्रोह के लिए तैयार करने की कोशिश की।
  राजा महेन्द्रप्रताप और बरकतुल्ला ने अफगानिस्तान के अमीर की मदद लेने की कोशिश की व अफगानिस्तान में एक अंतरिम सरकार गठित कर ली। परन्तु वे असफल रहे।
* गदर आंदोलन का चरित्र मूलतः धर्मनिरपेक्ष था।
* पंजाब में तुर्कशाही शब्द का प्रचलन था इसके इस्तेमाल को मना किया गया।
* पंजाब में 'वंदे मातरम्' को आज़ादी का सलाम माना गया।
* 1915 में सर्वसम्मति से रासबिहारी बोस को नेता बनाया गया।
* गदर आंदोलन की दूसरी विशेषता उसका लोकतांत्रिक व समतावादी चरित्र था।
* लाला हरदयाल अराजकतावादी, श्रमिक संघवादी और समाजवादी थे।
* हरदयाल ने गदर क्रांतिकारियों को अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाने को प्रेरित किया।
* इस आंदोलन की कुछ खामियाँ भी थीं।
  * जैसे ही प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ा गदर आंदोलनकारी अपनी ताकत व संगठन का आकलन किए बगैर मैदान में उतर गए।
  * लाला हरदयाल में कुशल नेतृत्व व संगठन की क्षमता नहीं थी, वह मूलतः एक प्रचारक व विचारक थे।
  * हरदयाल को उस समय अमरीका छोड़ना पड़ा जब उनकी जरूरत थी।
* 40 क्रांतिकारियों को फाँसी दी गई, 200 को लंबी सजाएं।

विपिन चंद्र

(1) JAYATI SINGH

CHAPTER-13

('होम रूल लीग' आंदोलन)

* 16 June, 1914 तिलक 6 वर्ष की सजा काट जेल से छूटे। (मंडालय जेल (बर्मा))
* उन्हें विश्वास हो गया था, कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का पर्याय बन चुकी है, इसलिए तिलक ने कांग्रेस शामिल होना चाहा।
* इसलिए तिलक ने अंग्रेजी हुकूमत में अपनी निष्ठा दोहराई और कहा —
  तिलक → "मैं साफ-साफ कहता हूँ कि हम लोग हिन्दुस्तान में प्रशासन-व्यवस्था का सुधार चाहते हैं, जैसा कि आयरलैंड में वहाँ के आंदोलनकारी माँग कर रहे हैं। अंग्रेजी हुकूमत को उखाड़ फेंकने का हमारा कोई इरादा नहीं।
* गरमपंथी कांग्रेस की अकर्मण्यता से क्षुब्ध थे, उन्हें तिलक की गरमपंथियों को कांग्रेस में शामिल करने की अपील भाई।
* एनी बेसेंट भी कांग्रेस पर गरमपंथियों को शामिल करने के लिए दबाव दिया।
* एनी बेसेंट → राजनीतिक जीवन की शुरुआत इंग्लैंड में हुआ।
* जहाँ इन्होंने स्वतंत्र चिंतन (फ्री थॉट), उग्र-सुधारवाद (रेडिकलिज्म), फेबियनवाद और ब्रह्मविद्या (थियोसॉफी) का प्रचार किया।
* 1893 में भारत आकर 'थियो-सॉफिकल सोसाइटी' के लिए काम करने हेतु मद्रास में अड्यार में दफ्तर खोल 1907 से ब्रह्मविद्या का प्रचार करने लगी।
* 1914 में आयरलैंड की होम रूल लीग की तरह भारत में आंदोलन के लिए कांग्रेस में शामिल हुई।
* 1914 के कांग्रेस अधिवेशन में ~~[illegible]~~ फिरोजशाह मेहता ने गोखले को गरमपंथियों को ना शामिल करने को मना लिया।
* तिलक व बेसेंट ने खुद आंदोलन चलाने का फैसला किया।
* 1915 में बेसेंट ने 'न्यू इंडिया' व 'कामनवील' अखबार द्वारा आंदोलन छेड़ा। माँग थी स्वशासन का अधिकार।
* तिलक ने 1915 में पूना में बैठक में कांग्रेस की गतिविधियों और उद्देश्यों को ग्रामीण जनता तक पहुँचाने के लिए संस्थान का गठन किया।
* दिसंबर 1915, कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में गरमपंथियों को कांग्रेस में शामिल करने का फैसला लिया गया। (फिरोजशाह व गोखले की मृत्यु के बाद)
* 'होम रूल लीग' के गठन पर कांग्रेस व मुस्लिम लीग की मंजूरी नहीं मिली।
* स्थानीय स्तर पर कांग्रेस समितियों को पुनर्जीवित करने के प्रस्ताव मंजूर हुआ।
* बेसेंट ने शर्त रखी Sep 1916 तक कांग्रेस ने इस पर अमल नहीं किया तो वह खुद अपना संगठन (लीग) बना लेंगी। (बेसेंट को)
* तिलक ने April 1916 में बेलगाँव में 'होम रूल लीग' के गठन की घोषणा की। (वादा नहीं किया था)

(2)

* एनी बेसेंट से 'होम रूल ग्रुप' की स्थापना की अनुमति ले जमनादास द्वारका दास, शंकरलाल बैंकर और इंदुलाल याज्ञनिक ने बंबई में 'यंग इंडिया' अखबार का प्रकाशन शुरू किया।
* Sept में एनी बेसेंट ने होम रूल लीग के स्थापना की घोषणा की व जॉर्ज अरूंडले को संगठन-सचिव बनाया।
* तिलक की लीग — कर्नाटक, महाराष्ट्र (बंबई छोड़कर), मध्य प्रांत, बेरार
* एनी बेसेंट — देश के बाकी हिस्से → कार्यक्षेत्र का बंटवारा विलय नहीं किया गया

तिलक → "भारत उस बेटे की तरह है, जो अब जवान हो चुका है। समय का तकाज़ा है कि बाप या पालक इस बेटे को उसका वाजिब हक दे दे। भारतीय जनता को अब अपना हक लेना ही होगा। उन्हें इसका पूरा अधिकार है।"

* तिलक ने भाषाई राज्यों की माँग को स्वराज से जोड़ा।

बंबई के प्रांतीय सम्मेलन (1915) में तिलक ने वी.वी. अलुर को कन्नड़ में बोलने को कहा। ← गोखले के निधन का शोक प्रस्ताव

* होम रूल की माँग पूर्णतः धर्मनिरपेक्षता पर आधारित थी।

तिलक → "यदि भगवान भी छुआछूत को बरदाश्त करे, तो मैं भगवान को नहीं मानूँगा।"

* तिलक अंग्रेजों का विरोध विधर्मी होने के कारण नहीं बल्कि भारतीय जनता के हित में काम नहीं करने के कारण करते थे।
* तिलक ने मराठी में 6 एवं अंग्रेजी में 2 परचे निकाला।
* तिलक के लीग की 6 शाखाएँ — मध्य महाराष्ट्र, बंबई नगर, कर्नाटक व मध्य प्रांत में एक-एक तथा बेरार में दो।
* 23 July 1916, तिलक को कारण बताओ नोटिस दिया गया। ← 1 लाख की थैली भेंट की गई

तिलक का 60 वाँ जन्मदिन — प्रतिबंध क्यों न लगाया जाए।

* 60 हजार रूपए का मुचलका भरने को कहा गया।

तिलक → "अब होम रूल आंदोलन जंगल में आग की तरह फैलेगा। सरकारी दमन विद्रोह की आग को और भड़काएगा।"

* मुहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में तिलक का मुकदमा वकीलों की टीम ने लड़ी मजिस्ट्रेट की अदालत में मुकदमा हारने के बाद Nov में HC ने निर्दोष करार

यंग इंडिया → "यह अभिव्यक्ति की आज़ादी की बहुत बड़ी जीत है। होम रूल आंदोलन के लिए यह एक बहुत बड़ी सफलता है।" ← गाँधी जी का अखबार

* अप्रैल 1917 तक तिलक ने 14 हजार सदस्य बनाए।

एनी बेसेंट की लीग ने Sept 1916 से काम शुरू किया।

* कोई भी 3 व्यक्ति मिलकर शाखा खोल सकता था। ← तिलक की लीग के मुकाबले ढीला था।

(8)

* एनी बेसेंट के लीग की 200 शाखाएँ थीं।
* सारा काम बेसेंट, अरुंडेल, सी॰पी॰ रामास्वामी अय्यर व बी॰ पी॰ वाडिया देखते थे।
* 'न्यू इंडिया' में अरुंडेल के लेख से सदस्यों को निर्देश दिए जाते थे।
* March, 1917 तक 7000 सदस्य बने।
* जवाहर लाल नेहरू (इलाहाबाद), बी. चक्रवर्ती और जे. बनर्जी (कलकत्ता) भी शामिल हो गए।
* एकमात्र लक्ष्य था होम रूल की माँग पर बड़े पैमाने पर आंदोलन छेड़ना।
* Sept 1916 तक 'प्रचार फंड' के 3 लाख पर्चे बाँटे गए। — बेसेंट की लीग की स्थापना के
  सरकार का कच्चा चिट्ठा
* Nov. 1916 में एनी बेसेंट पर बेरार व मध्य प्रांत जाने पर प्रतिबंध लगा।
  1917 में तिलक पर पंजाब और दिल्ली जाने पर प्रतिबंध लगा।
  → लीग की तमाम शाखाओं ने विरोध किया
* नरमपंथी कांग्रेसी भी लीग में शामिल हुए।
* गोखले की 'सर्वेंट-ऑफ इंडिया सोसाइटी' के सदस्यों को सदस्य बनने की इजाजत नहीं थी। पर्चे बाँट व भाषण द्वारा समर्थन किया।
* नरमपंथियों ने लीग का समर्थन किया क्योंकि लीग उन्हीं का काम कर रही थी।
* लखनऊ अधिवेशन में तिलक के समर्थकों ने ट्रेन आरक्षित कर 'कांग्रेस स्पेशल' या 'होम रूल स्पेशल' कहा। परंपरा बना दि गई
* 1916 लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में तिलक को कांग्रेस में शामिल किया गया।
  अंबिकाचरण मजुमदार → 10 वर्षों के दुखद अलगाव तथा गलत-फहमी के कारण बेवजह के विवादों में भटकने के बाद भारतीय राष्ट्रीय दल के दोनों खेमों ने अब यह महसूस किया है कि अलगाव उनकी पराजय है और एकता उनकी जीत। अब भाई-भाई फिर मिल गए हैं। — अध्यक्ष
* इस अधिवेशन में कांग्रेस-लीग समझौता हुआ जो 'लखनऊ पैक्ट' कहलाया। — लखनऊ पैक्ट
  मदनमोहन मालवीय खिलाफ थे। → लीग को बहुत तवज्जो देता है
* तिलक को कट्टरवादी हिन्दू माना जाता था, पर उन्हें लखनऊ पैक्ट से एतराज न था।
* अधिवेशन में संवैधानिक सुधारों की माँग उठाई पर वो माँग शामिल नहीं थे जो लीग चाहती थी। विवाद नहीं किया ताकि एकता बनी रहे
* तिलक ने एक कार्यकारिणी के गठन का प्रस्ताव रखा, जो मंजूर नहीं हुआ।
  1920 में गाँधीजी ने माना (4 साल बाद)
* अधिवेशन के तुरंत बाद उसी पंडाल में दो लीग की बैठक हुई।
* दोनों नेताओं ने उत्तर, मध्य व पूर्वी भारत का दौरा किया।
*

(4)

सरकारी दमन → मद्रास सरकार ज्यादा कठोर हो गई। छात्रों के राजनीतिक बैठक में भाग लेने पर प्रतिबंध लगाया।

तिलक → "सरकार को मालूम है कि देश-प्रेम की भावना छात्रों को ज्यादा प्रेरित करती है। वैसे भी कोई देश युवा वर्ग की ताकत से ही उन्नति कर सकता है।"

* मद्रास सरकार ने जून 1917 में एनी बेसेंट, जार्ज अरुंडेल तथा बी॰पी॰ वाडिया को गिरफ्तार कर लिया।
* एस॰ सुब्रमण्यम अय्यर ने 'नाइटहुड' की उपाधि अस्वीकार कर दी।
* मालवीय, सुरेंद्रनाथ बनर्जी और जिन्ना लीग में शामिल हो गए।
* तिलक ने कहा इन लोगों को रिहा न करने पर 'असहयोग आंदोलन' चलाया जाएगा।

(अगस्त में लिखा) मॉंटेग्यू → "शिव ने अपनी पत्नी को 52 टुकड़ों में काटा, भारत सरकार ने जब एनी बेसेंट को गिरफ्तार किया, तो उसके साथ ठीक वैसा ही हुआ।"

* सरकार ने नीतियां बदलकर समझौतावादी रुख अपनाया।

(हाउस ऑफ कॉमन्स से) मॉंटेग्यू → (गृह सचिव) "ब्रिटिश शासन की नीति है कि भारत के प्रशासन में भारतीय जनता को भागीदार बनाया जाए और स्वशासन के लिए विभिन्न संस्थानों का क्रमिक विकास किया जाए जिससे भारत में ब्रिटिश साम्राज्य सरकार से जुड़ी कोई उत्तरदायी सरकार स्थापित की जा सके।"

* यह बात भी घोषणा में थी कि स्वशासन की स्थापना उचित समय आने पे होगा।
* 1917 में बेसेंट को रिहा किया गया।
* (तिलक के प्रस्ताव पर) दिसंबर 1917 में कांग्रेस के अधिवेशन में बेसेंट को अध्यक्ष चुना गया।
* 1918 में आंदोलन कमजोर पड़ गया।
* 1918 में सुधार-योजनाओं की घोषणा से राष्ट्रवादी खेमे में दरार पड़ी। (बेसेंट दुविधा में थी)
* साल के अंत में तिलक इंग्लैंड चले गए।
* तिलक ने 'इंडियन अनरेस्ट' के लेखक 'चिरोल' पर मानहानि का मुकदमा किया था उसके लिए महीनों इंग्लैंड में रहे।
* बेसेंट सशक्त नेतृत्व नहीं दे पायी, आंदोलन नेतृत्व विहीन हो गया।
* 'होम रूल आंदोलन' ने जिन्हें राजनीतिक रूप से जागरूक बनाया वे लोग (1919 में गांधीजी ने) 'रौलेट एक्ट' के खिलाफ सत्याग्रह में शामिल हुए।

(1)

JAYATI SINGH

बिपिन चंद्र

CHAPTER – 14

(गाँधी : दक्षिण अफ्रीका से रौलट सत्याग्रह तक)

दक्षिण अफ्रीका :–

* गाँधीजी 1893 (24 वर्ष) में गुजराती व्यापारी दादा अब्दुल्ला का मुकदमा लड़ने डरबन (द० अफ्रीका) गए।
  (मुकदमे के बैरिस्टर बने – पहले भारतीय बैरिस्टर)
* द० अफ्रीका के गोरे, गन्ने की खेती कराने के लिए इकरारनामे के तहत भारतीय मजदूरों को अपने यहाँ ले गए (1860 में)। इसके बाद भारतीय वहाँ बसने लगे।
* भारतीयों के प्रति गोरी जाति, जातीय भेदभाव बरतती थी।
* डरबन में एक हफ्ते रहने के बाद, गाँधीजी प्रिटोरिया रवाना हुए, तो उन्हें जबरन जोहांसबर्ग में उतार दिया गया। → प्रथम श्रेणी की टिकट होने के बावजूद
* प्रिटोरिया पहुँचने पर उन्होंने भारतीयों की बैठक आयोजित कर गोरों के अत्याचार का विरोध किया।
* गाँधीजी ने इच्छुक भारतीयों को अंग्रेजी सिखाने का वादा किया, प्रेस के माध्यम से अपना विरोध प्रकट किया।
* गाँधीजी → क्या यही ईसाइयत है, यही मानवता है, यही न्याय है, इसी को सभ्यता कहते हैं। (नटाल एडवर्टाइजर को लिखी चिट्ठी में)
* गाँधीजी जिस दिन लौटने वाले थे उसकी पूर्व-संध्या को भारतीयों को मताधिकार से वंचित करने वाला विधेयक का मामला उठा। (नटाल विधानमंडल में पारित होने वाला था)
* भारतीयों ने गाँधीजी को एक महीने को रुकने को कहा। – 20 वर्षों तक रुके।
* रंगभेद के खिलाफ आंदोलन चलाने की जिम्मेदारी गाँधीजी पर ही थी।
* 1894–1906 तक गाँधीजी की राजनीतिक गतिविधियों को भारतीयों के 'नरमपंथी' आंदोलन की संज्ञा दे सकते हैं।
  (द० अफ्रीकी विधानमंडलों, लंदन के गृहसचिव व ब्रिटिश संसद को ज्ञापन व याचिका भेजी)
* गाँधीजी ने 'नटाल भारतीय कांग्रेस' व 'इंडियन ओपीनियन' अखबार निकाले। (भारतीयों के मांग उठाने के लिए)

सत्याग्रह आंदोलन →

* 1906 के बाद गाँधीजी ने अवज्ञा आंदोलन शुरू किया, जिसे सत्याग्रह कहा गया।
* भारतीय को पंजीकरण प्रमाण पत्र के खिलाफ सबसे पहले इसका इस्तेमाल किया। (अंगूठे का निशान लगा, 24 घंटे पास रखना था)
* 11 Sept, 1906 को जोहांसबर्ग के एंपायर थियेटर में भारतीयों की सभा में
* इस कानून को मानने से इंकार किया गया।

(21)

* पंजीकरण की तारीख बीतने पर गाँधीजी समेत 27 लोगों पर मुकद्दमा चला।
दोषी ठहरा कर देश छोड़ने का आदेश दिया, ना मानने पर जेल भेजा गया। 155 लोग

* जेल को लोगों ने 'किंग एडवर्ड का होटल' कहा।

* सरकार ने गाँधीजी से कहा स्वेच्छा से पंजीकरण करवाने पर कानून वापस ले लिया जाएगा, पर सरकार ने ऐसा नहीं किया। (स्वेच्छा से सबसे पहले गाँधीजी ने पंजीकरण कराया)

* सरकार ने प्रवासी भारतीयों के प्रवेश को रोकने के लिए कानून बनाया। कानून का विरोध करने वरिष्ठ भारतीय नटाल से ट्रांसवाल गए, इन्हें गिरफ्तार किया गया। ट्रांसवाल के भारतीयों ने आंदोलन में साथ दिया

* इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, 1908 में गाँधीजी भी जेल चले गए।

* जब सरकार प्रतिरोध को ना दबा सकी, तो मजबूर होकर भारतीयों को (देश) देश से निकालने लगी।

* गाँधीजी ने टालस्टाय फार्म स्थापित किया और कालेनबाख की मदद से सत्याग्रहियों के परिवार की पुनर्वास की समस्या सुलझाई। जर्मन शिल्पकार दोस्त (रतन टाटा ने 25 हजार दिए)

* 'टालस्टाय फार्म' बाद में 'गाँधी आश्रम' बना। (कांग्रेस, मुस्लिम लीग, निजाम हैदराबाद ने भी मदद की)

* 1911 में सरकार व भारतीयों के बीच समझौता हुआ जो 1912 तक चला।

* गोखले ने द० अफ्रीका का दौरा किया, सरकार ने सारे कानून समाप्त करने का आश्वासन दिया जो पूरा न होने पर 1913 में फिर सत्याग्रह किए गया।

* इकरारनामे की अवधि खत्म होने पर भी 3 पौंड कर लगाया गया।
एक महीने में 10 शिलिंग कमाते थे

* SC ने सभी शादियाँ, जो ईसाई पद्धति से नहीं सम्पन्न हुई थी व पंजीकरण नहीं हुआ था, अवैध करार दिया।

* भारतीयों के लिए यह अपमानजनक था, महिलाएँ भी सत्याग्रह में शरीक हुई।

* कस्तूरबा गाँधी समेत 16 सत्याग्रही कानून की अवहेलना कर नटाल से ट्रांसवाल पहुँच गए और गिरफ्तार कर लिए गए।

* 11 महिलाओं का जत्था बिना परमिट के टालस्टाय फार्म से मार्च करते हुए नटाल पहुँचा, गिरफ्तार कर लिया गया।
खदान मजदूरों से बात कर हड़ताल के लिए प्रोत्साहित किया

* गाँधीजी न्यूकैसल से 2000 मजदूर के साथ ट्रांसवाल चले, गाँधीजी को 2 बार गिरफ्तार कर छोड़ दिया गया, तीसरी बार जेल भेज दिया गया।

* जेल में इन पर तरह-तरह के जुल्म ढाए गए, जिसकी लॉर्ड हार्डिंग ने भी निंदा की और इसकी निष्पक्ष जाँच कराने की अपील की।

* गोखले ने भारत का दौरा कर इसके खिलाफ जनमत तैयार किया।

हार्डिंग → "ऐसा कोई भी देश, जो अपने को सभ्य कहता हो, इस तरह के अत्याचारों को बर्दाश्त नहीं करेगा।"

(8)

* लार्ड हार्डिंग, गाँधीजी, गोखले, C.F. एंड्रयूज से बातचीत कर सरकार ने भारतीयों की मुख्य माँगें मान लीं।

3 पौंड का कर, पंजीकरण प्रमाणपत्र कानून खत्म किए, भारतीय रीति-रिवाज की शादी

* द० अफ्रीका में गाँधीजी की जान दो बार खतरे में पड़ी—

(1) 1896 में डरबन में गोरे नागरिकों की भीड़ ने उन्हें सड़क पर व बाद में घर में घेर लिया।

(2) एक भारतीय पठान ने उनपर हमला किया। → गाँधीजी के सरकार के साथ समझौते से नाराज होकर

भारत वापसी :—

* गाँधीजी 1915 में भारत लौटे।
* गोखले ने कहा था गाँधीजी में लोगों को सम्मोहित करने की अनोखी प्रतिभा है।
* साल भर गाँधीजी देश का दौरा कर अहमदाबाद में अपने आश्रम को जमाने का काम किया, राजनीतिक मुद्दे पर कोई सार्वजनिक कदम नहीं उठाया।
* दूसरे साल 'होम रूल आंदोलन' में वह शरीक नहीं हुए। वे होम रूल की रणनीति के खिलाफ थे।

अंग्रेजों पर कोई भी मुसीबत उनके लिए अवसर है

* वे संघर्ष का एकमात्र तरीका सत्याग्रह मानते थे।
* 1917–1918 में गाँधीजी ने तीन संघर्षों — चंपारण आंदोलन, अहमदाबाद और खेड़ा में हिस्सा लिया।

(1) चंपारण →

* 19वीं सदी में किसानों से 3/20 वें हिस्से में नील की खेती करने का अनुबंध कराया गया। तिनकठिया पद्धति
* जब नील की खेती बंद हुई तो किसानों को इससे छुटकारे के लिए लगान व अन्य गैरकानूनी अब्वाबों की दर बढ़ा दी गई।
* 1917 में चंपारण के राजकुमार शुक्ल गाँधीजी को चंपारण बुलाया।
* चंपारण के कमिश्नर ने उन्हें तुरंत वापस जाने को कहा, गाँधीजी ने इंकार कर दिया
* वह अपने सहयोगियों — ब्रज किशोर, राजेंद्र प्रसाद, महादेव देसाई, नरहरि पारेख, जे० बी० कृपलानी के साथ घूम-घूमकर किसानों का बयान दर्ज किया।
* सरकार ने मामले की जाँच के लिए आयोग गठित किया और गाँधीजी को सदस्य बनाया।
* बागान मालिक 25% वापस करने पर राजी हुए।

(2) अहमदाबाद →

* मिल-मालिकों और मजदूरों में 'प्लेग-बोनस' को लेकर विवाद था।
* प्लेग खत्म होने पर मालिक समाप्त करना चाहते थे पर मजदूर बरकरार रखने की माँग कर रहे थे

- * ब्रिटिश कलक्टर ने गाँधीजी से समझौता के लिए मालिकों को मनाने कहा।
- * अँबालाल साराभाई गाँधीजी के दोस्त थे।
- * गाँधीजी ने मामले को ट्रिब्यूनल को सौंप देने कहा।
- * हड़ताल का बहाना बना मालिकों ने इससे खुद को अलग कर 20% बोनस देने की बात की।
- * मजदूरों को हड़ताल पर जाने को कहा और 35% बोनस की बात की गाँधीजी भूख हड़ताल पर बैठ गए, तो ट्रिब्यूनल ने 35% बोनस का फैसला किया

(अँबालाल साराभाई की बहन अनुसूया बेन ने साथ दिया)

खेड़ा →

- * फसल बरबाद होने के बाद भी सरकार मालगुजारी वसूल रही थी।
- * 'सर्वेंट ऑफ इंडिया सोसाइटी' के सदस्य, विट्ठलभाई पटेल और गाँधीजी ने निष्कर्ष निकाला 'राजस्व संहिता' के तहत पूरा लगान माफ होना चाहिए।
- * महत्वपूर्ण भूमिका 'गुजरात सभा' ने निभाई।
- * किसानों को लगान न देने की शपथ दिलाई।
- * वल्लभ भाई पटेल, इंदुलाल याज्ञनिक ने गाँधीजी के साथ गाँवों का दौरा किया
- * सरकार ने अधिकारियों को गुप्त निर्देश दिया कि लगान उन्हीं से वसूले जो देने की स्थिति में हैं।

रौलट सत्याग्रह →

- * फरवरी, 1919 में लेजिस्लेटिव कौंसिल ने विधेयक प्रस्तावित हुआ और इसपर पारित कर दिया गया। भारतीय सदस्यों के विरोध के बावजूद
- * गाँधीजी ने सत्याग्रह शुरू करने का सुझाव दिया व 'सत्याग्रह सभा' गठित की गई। (होमरूल लीग के युवा सदस्य शामिल थे)
- * सत्याग्रह 6 April से शुरू करने की तारीख तय की गई।
- * दिल्ली में 30 March को आयोजित की गई। → तारीख के बारे में गलतफहमी के कारण
- * अमृतसर और लाहौर की जनता काफी उग्र थी।
- * गाँधीजी को पंजाब में घुसने नहीं दिया गया; वे बंबई व गुजरात को शांत करने लगे।
- * 10 April को सैफुद्दीन किचलु और डॉ सत्यपाल की गिरफ्तारी के खिलाफ अमृतसर में टाउन हॉल और पोस्ट ऑफिस पर हमले किए गए।
- * प्रशासन जनरल डायर को सौंपा गया, उसने जनसभा पर प्रतिबंध लगा दिया।
- * 13 April को जलियावाला बाग में सभा आयोजित की, डायर ने इसे अपने आदेश का अवहेलना माना। → किचलु और सत्यपाल के गिरफ्तारी के खिलाफ (बैसाखी)
- * जनसभा की निहत्थी जनता पर गोली चलाने का आदेश दिया डायर ने।
- * सरकारी आँकड़ों के अनुसार 379 व्यक्ति मारे गए। ← 10 मिनट गोली चली
- * इसके बाद दमन का रास्ता अपनाया गया, पँजाब में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया।
- * गाँधीजी ने जब देखा पूरा माहौल हिंसा की लपेट में है, तो 18 April को आंदोलन वापस ले लिया गया।

① JAYATI SINGH

CHAPTER-15

बिपिन चंद्र

(असहयोग आंदोलन 1920-22)

कारण →

* प्रथम विश्वयुद्ध के बाद लोगो को अंग्रेजी हुकूमत के कुछ करने की उम्मीद थी, पर सरकार ने दमन के सिवा कुछ नहीं दिया।
* मांटाग्यू चेम्सफोर्ड सुधार (1919) का मकसद भी सिर्फ दोहरी शासन प्रणाली लागू करना था; जनता को राहत देना नहीं।
* अंग्रेजो ने तुर्की के प्रति उदार होने का वादे से भी मुकर गए।
  प्रथम विश्वयुद्ध में मुसलमानों के सहयोग के लिए
* हंटर कमेटी के जाँच से भी लोग क्षुब्ध थे।
* 'हाउस ऑफ लॉर्ड्स' ने जनरल डायर के कारनामों को उचित ठहराया।
* मार्निंग पोस्ट ने जनरल डायर को 30 हजार पौंड दिया।
* तुर्की के साथ 1920 की संधि से तुर्की के विभाजन का फैसला अंतिम था।
* Nov 1919 में खिलाफत सम्मेलन में गाँधीजी को विशेष अतिथि के रूप में बुलाया गया था।
* 1920 में गाँधीजी ने खिलाफत कमेटी को असहयोग आंदोलन छेड़ने को बोला 9 June 1920 इलाहाबाद में इसे स्वीकार कर उन्हें अगुवाई करने कहा।
* May 1920 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक के बाद Sept में विशेष अधिवेशन का फैसला हुआ। उद्देश्य – आगे की रणनीति तय करना
* आर्थिक कठिनाइयों ने जनता को संघर्ष के लिए उकसाया।

आंदोलन →

* 1 Aug, 1920 को असहयोग आंदोलन प्रारंभ हुआ।

22 June को वायसराय को नोटिस

गाँधीजी → "कुशासन करने वाले शासक को सहयोग देने से इनकार करने का अधिकार हर आदमी को है।"

* 1 Aug, 1920 को प्रातः तिलक का निधन हो गया।
* Sept में कलकत्ता में कांग्रेस ने ~~असहयो~~ असहयोग आंदोलन को मंजूरी दी। – मुख्य विरोधी R. C. दास,
  लेजिस्लेटिव एसेंबली के बहिष्कार को लेकर

* दिसम्बर में नागपुर अधिवेशन में R.C दास ने असहयोग आंदोलन के से संबद्ध प्रस्ताव रखा। – असहयोग आंदोलन की पुष्टि
* असहयोग आंदोलन से असहमत होने के कारण मुहम्मद अली जिन्ना, ऐनी बेसेंट तथा विपिन चंद्रपाल ने कांग्रेस छोड़ दी।
* क्रांतिकारी आतंकवादियों के गुटों ने इस आंदोलन का समर्थन किया। (ज्यादातर बंगाल में)
* कांग्रेस के संगठनात्मक ढाँचे में परिवर्तन के साथ उद्देश्य भी बदल गए। पहले उद्देश्य था स्वशासन अब था स्वराज।
* 15 सदस्यीय कार्यकारिणी गठित की गई। – 1916 में तिलक ने प्रस्ताव दिया था
* प्रदेश कांग्रेस समितियों का गठन किया गया। – स्थानीय स्तर पर
* सदस्यता फीस चार आना साल कर दी गई।
* गाँधीजी ने खिलाफत नेता अली भाइयों के साथ पूरे देश का दौरा किया।
* कलकत्ता के विद्यार्थियों ने राज्यव्यापी हड़ताल किया। (R.C दास ने प्रोत्साहित किया)
  सुभाषचंद्र बोस 'नेशनल कॉलेज' (कलकत्ता) के प्रधानाचार्य बने।
* बंगाल के बाद शिक्षा का ज्यादा बहिष्कार पंजाब में हुआ। (लाला लाजपत राय ने काम किया)
  R.C दास, मोतीलाल नेहरू, M.R. जयकर, किचलू, वल्लभ भाई पटेल, C. राजगोपालाचारी, टी॰ प्रकाशम और आसफ अली ने वकालत छोड़ दी।
* प्रभुदास गाँधी, महात्मा गाँधी के साथ देश के दौरे पर गए थे।
* बहिष्कार आंदोलन में सबसे अधिक सफल विदेशी कपड़ों का बहिष्कार था। – 1920-21 में 102 करोड़ का आयात हुआ
  1921-22 में 57 करोड़ का आयात हुआ।
* ताड़ी की दुकान पर धरना जो मूल कार्यक्रम में नहीं था, बहुत लोकप्रिय हुई। सरकार को आर्थिक नुकसान हुआ।
* 8 July, 1921 में खिलाफत सम्मेलन में मुहम्मद अली ने घोषणा की मुसलमान का सेना में रहना धर्म के खिलाफ है।
* इसके बाद इन्हें साथियों समेत गिरफ्तार कर लिया गया।
  असहयोग आंदोलन में सर्वप्रथम मुहम्मद अली गिरफ्तार हुए

(8)

* 4 Oct को गाँधी समेत कांग्रेस के 47 नेताओं ने बयान जारी कर मुहम्मद अली के बयान की पुष्टि की।
* 16 Oct को पूरे देश में कांग्रेस समितियों की बैठक ने इसे मंजूरी की।
* सरकार ने हार मान ली।
* 17 Nov 1921 को प्रिंस ऑफ वेलस की भारत यात्रा शुरू हुई। पूरे भारत में हड़ताल
जिस दिन वे बंबई आए उस दिन गाँधीजी ने 'एलफिंस्टन मिल' (बंबई) मजदूरों की सभा में भाषण दिया।
* शहर में दंगा भड़क उठा 58 व्यक्ति मरे।
* गाँधीजी के 3 दिन के अनशन के बाद हिंसा खत्म हुई।
* कांग्रेस (प्रदेश) समितियों को इजाज़त थी अवज्ञा आंदोलन छेड़ने की।
* मिदनापुर (बंगाल) और गुंटूर जिले (आंध्र) के चिराला - पिराला और पेडानंडीपाडु तालुका में कर ना अदा करने का आंदोलन छिड़ा।
* जे० एम० सेनगुप्त (Medical Student, Kolkata) ने जमींदारी कंपनी के खिलाफ काश्तकारों के हड़ताल का साथ दिया।
* पंजाब में अकालियों ने महंतों के खिलाफ आंदोलन छेड़ा।
लॉर्ड रीडिंग फूट डालने के लिए May, 1921 में वाइसराय ने गाँधीजी से कहा कि वे अली भाइयों को अपने भाषणों में हिंसा भड़काने वाली बात ना कहने को मनाए।
* दिसंबर आते - आते स्वयंसेवी संगठनों को गैर - कानूनी घोषित कर, सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया।
* सबसे पहले R.C. दास उसके बाद उनकी पत्नी बासंती देवी को गिरफ्तार किया गया।
* बड़े नेता में केवल गाँधीजी बाहर थे।
* Dec के मध्य में मालवीयजी के माध्यम से बातचीत से मामला सुलझाने की कोशिश को गाँधीजी ने मना कर दिया। खिलाफत के आंदोलन के विरुद्ध थी
बैठक, सभाओं पर प्रतिबंध लगाया गया, अखबार बंद कर दी गई।

(4)

चौरीचौरा कांड →

* Dec, 1921 में अहमदाबाद कांग्रेस सम्मेलन में आंदोलन के लिए रणनीति तय करने की जिम्मेदारी गाँधीजी को सौंपी गई।
* Jan 1922 में सर्वदलीय सम्मेलन की अपील और गाँधीजी के पत्र का सरकार पर कोई असर नहीं हुआ।

1 Feb, 1922 < गाँधीजी → यदि सरकार नागरिक स्वतंत्रता बहाल नहीं करेगी, राजनीतिक बंदियों को रिहा नहीं करेगी, तो वह देशव्यापी सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ने को बाध्य हो जाएंगे।

* सविनय अवज्ञा आंदोलन बारदोली तालुका (सूरत) से शुरू होना था।
* गाँधीजी ने जनता से अनुशासित व शांत रहने की अपील की।
* 5 Feb, 1922 को चौरी-चौरा (संयुक्त प्रांत, गोरखपुर जिला) में कांग्रेस और खिलाफ़त का एक जुलूस निकला। - 3000 किसान
* पुलिस ने गोली चलाई, भीड़ ने उत्तेजित होकर थाने में आग लगा दी (22 पुलिस मारे गए)

12 Feb, 1922 को आंदोलन समाप्त हो गया। - बारदोली में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग में

* ब्रितानी मार्क्सवादी रजनीपाम दत्त ने गाँधी के निर्णय की आलोचना की।
* 12 Feb, 1922 को कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में प्रस्ताव पारित हुआ, इसे बारदोली प्रस्ताव कहा गया। आंदोलन वापस लेने को

⟹ निर्णय के विरोध में आलोचकों के तर्क:—

1. गाँधीजी अमीर वर्गों के हितों का ख्याल रखते थे और भारतीय जनता अमीर शोषकों के खिलाफ कमर कस रही है।
2. गाँधीजी को लगा कि आंदोलन की बागडोर उनके हाथ से निकल लड़ाकू ताक़तों के हाथ में जाने वाली है।
3. पूँजीपतियों और भूस्वामियों के खिलाफ लड़ाई होने वाली है, उनका उद्देश्य जमींदारों के हितों की रक्षा करना था।

* कर अदा न करना असहयोग आंदोलन का हिस्सा था, इसलिए जब आंदोलन वापस लिया गया, तो किसानों और काश्तकारों को कर व लगान की अदायगी करने को कहा गया।

(5)

उत्तर — मॉंटाग्यू और बरकेनहेड → "भारत, दुनिया की सबसे शक्तिशाली सत्ता को चुनौती नहीं दे सकता और अगर चुनौती दी गई, तो इसका उत्तर पूरी ताक़त से दिया जाएगा।"

23 Feb, 1922 — गाँधीजी →(यंग इंडिया) "अंग्रेजो को यह जान लेना चाहिए कि 1920 में छिड़ा संघर्ष अंतिम संघर्ष है, निर्णायक संघर्ष है, फैसला होकर रहेगा, चाहे एक महीना लग जाए या एक साल लग जाए, कई महीने लग जाएँ या कई साल लग जाएँ। अंग्रेजी हुकूमत चाहे उतना ही दमन करे जितना 1857 के विद्रोह के समय किया था, फैसला होकर रहेगा।"

SOME IMP. POINTS:—

⇒ खिलाफत आंदोलन → भारतीय मुसलमानों का मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध विशेषकर ब्रिटेन के खिलाफ तुर्की के खलीफा के समर्थन में था।

* 19 Oct 1919 को देश में खिलाफत दिवस मनाया गया।

* 23 Nov. 1919 को हिन्दू और मुसलमानों की एक संयुक्त कांफ्रेंस हुई। → अध्यक्ष महात्मा गाँधी

⇒ रॉलेट ऐक्ट, जलियाँवाला बाग कांड और खिलाफत आंदोलन के उत्तर में गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया।

⇒ 18 March, 1922 को गाँधीजी को गिरफ्तार कर 6 वर्ष की सजा सुनाई। 5. Feb. 1924 को रिहा कर दिया गया।

↓

~~अस्वास्थ्य~~। स्वास्थ्य संबंधी कारणों से

① Jayati Singh   विपिन चंद्र

CHAPTER – 16

(किसान आंदोलन और राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष उ० प्र०)
मलाबार और बारदोली

अवध में किसान सभा ⟶

* 1859 में अवध पर अंग्रेजों के कब्जे के बाद तालुकदारों और बड़े
* जमींदारों द्वारा किसानों का शोषण बढ़ गया। पहले लगान का एक हिस्सा मिलता अब जमीन के मालिक
* अवध में होम रूल कार्यकर्ता किसानों को संगठित करने लगे व नाम दिया 'किसान सभा'।
* गौरीशंकर मिश्र, इंद्रनारायण द्विवेदी और मदनमोहन मालवीय के प्रयासों से Feb 1918 उ०प्र० किसान सभा गठित हुई।
* उस समय नए संविधान की बात हो रही थी, इंद्रनारायण द्विवेदी ने किसानों के हितों का ख्याल रखने की याचिका दी।
* 1919 के अंतिम दिनों में किसानों का संगठित विद्रोह खुलकर सामने आया।
* प्रतापगढ़ में 'नाई-धोबी बंद' सामाजिक बहिष्कार पहली संगठित कार्यवाई।
* अवध में किसान बैठकों में महत्वपूर्ण भूमिका झिंगुरी सिंह और दुर्गपाल सिंह ने निभाई।
* इसके बाद बाबा रामचंद्र ने आंदोलन को मजबूत और जुझारू बनाया। 1920 के मध्य में किसान नेता के रूप में उभरे
* June, 1920 में बाबा रामचंद्र जौनपुर व प्रतापगढ़ के किसानों को लेकर इलाहाबाद पहुंचे, वहाँ गौरीशंकर मिश्र व जवाहरलाल नेहरू से मिले।
* प्रतापगढ़ के डिप्टी कमिश्नर मेहता ने किसानों को शिकायतें सुनने व उन्हें दूर करने का आश्वासन दिया।
* प्रतापगढ़ जिले का रूर गाँव किसान सभा का मुख्य केन्द्र बना। एक लाख किसानों ने शिकायत दर्ज कराई (फीस एक आना)
* गौरीशंकर मिश्र प्रतापगढ़ में काफी सक्रिय थे और किसानों की बेदखली तथा नजराना की शिकायतों को लेकर मेहता से समझौता करने वाले थे, पर Aug 1920 में मेहता छुट्टी पर चले गए।

Jayati Singh

- 28 Aug, 1920 को चोरी के आरोप में बाबा रामचंद्र और 32 किसान गिरफ्तार कर लिए गए।
- 10 दिन बाद अफवाह फैली बाबा को छुड़ाने गाँधीजी आ रहे हैं।
- किसान प्रतापगढ़ में इकट्ठा हो गए, जब बाबा को कल छोड़ने का आश्वासन दिया गया तब माने।
- स्थिति संभालने मेहता को वापस बुलाया गया।
- मेहता ने चोरी का मामला रफा-दफा कर जमींदारों पर दबाव डाला
- असहयोग आंदोलन को लेकर राष्ट्रवादी नेताओं में मतभेद हुए।
- असहयोग आंदोलन कारियों ने अवध किसान सभा का गठन किया। 17 Oct 1920 प्रतापगढ़ में एक साझीतर संगठन
- 20 व 21 Dec को अवध किसान सभा की विशाल रैली हुई, जिसमें बाबा रामचंद्र रस्सी से बंधे हुए आए। → अयोध्या में
- किसानों की गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र रायबरेली, फैजाबाद, सुलतानपुर थे।
- लूटपाट व पुलिस से संघर्ष ही किसानों की गतिविधियाँ थीं।
- Jan, 1921 में आंदोलन समाप्तप्राय हो गया।
- मार्च में 'देशद्रोही बैठक अधिनियम' लागू किया गया। ← अदालती लड़ाई चलती रही
- अवध मालगुजारी (रेंट) (संशोधन) अधिनियम पारित हुआ।
- 1921 के अंत में किसान आंदोलन फिर भड़का एक (एकता) आंदोलन के नाम से। — 50 प्रतिशत ज्यादा लगान वसूला जा रहा था।
- केंद्र थे हरदोई, बहराइच और सीतापुर। — खिलाफत व कांग्रेस नेता ने साथ दिया
- बैठक के शुरू में एक गड्ढे में पानी भर उसे गंगा माना जाता फिर उसकी कसम खाई जाती।
- आंदोलन का नेतृत्व पिछड़ी जाती के हाथ जाने से राष्ट्रवादी अलग-थलग पड़ गए।
- किसान सभा आंदोलन काश्तकारों का आंदोलन था पर एका आंदोलन में छोटे-मोटे जमींदार शामिल थे।
- March 1922 में दमन द्वारा आंदोलन खत्म कर दिया गया।

(8) Jayati Singh

माप्पिला विद्रोह →

* Aug, 1921 में मलाबार ज़िले (केरल) में काश्तकारों का विद्रोह।
* ज़मींदार मनमाना लगान वसूलते और बेदखल कर देते।
* 19वीं सदी में माप्पिला किसानों ने ज़मींदारों के खिलाफ विद्रोह किया और 1921 में काश्तकारों ने। — खिलाफत आंदोलन भी साथ में चला
* April, 1920 में मालाबार ज़िला कांग्रेस सम्मेलन (मंजेरी) में खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया व ज़मींदार - काश्तकारी के संबंध को तय करने हेतु कानून बनाने की माँग की गई।
* कोझीकोड में काश्तकारों का एक संगठन बनाया गया।
* गाँधीजी, शौकत अली और मौलाना आजाद ने इन इलाकों का दौरा कर आंदोलन का समर्थन किया।
* 15 Feb, 1921 को सरकार ने निषेधाज्ञा लागू कर खिलाफत आंदोलन से संबंधित बैठक पर रोक लगा दी।
  तर्क → बैठकों के माध्यम से माप्पिलाओं को सरकार व हिंदू ज़मींदारों के खिलाफ भड़काया जाएगा।
* 18 Feb को खिलाफत आंदोलन तथा कांग्रेस नेताओं याकूब हसन, यू० गोपाल मेनन, पी. मोइद्दीन कोया एवं के माधवन नायर को गिरफ्तार किया गया। — नेतृत्व माप्पिला नेताओं के हाथ चला गया
* एरनाड का ← 20 Aug 1921 मजिस्ट्रेट ने सेना व पुलिस जवानों को लेकर खिलाफत आंदोलन के नेता ← अली मुसलियार को गिरफ्तार करने तिरूरंगडी की मस्जिद पर छापा मारा मुसलियार के ना मिलने पर खिलाफत आंदोलन के 3 नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।
* सेना के मसजिद में छापा मारने की खबर से अन्य जगहों से माप्पिला तिरूरंगडी में इकट्ठा हो नेताओं की रिहाई की माँग करने लगी
* पुलिस ने निहत्थी भीड़ पर गोली चलाई तो विद्रोह पूरे एरनाड में फैला
* हाथस ← जिलाधिकारी कोझीकोड भाग गया।
* विद्रोही नेता जैसे कुनहम्मद हाजी इस बात का ध्यान रखते की हिन्दुओं को सताया ना जाए।
* हुकूमत ने मार्शल लॉ (सैनिक शासन) की घोषणा कर हिन्दुओं को जबरदस्ती साथ देने को कहा, जिससे संघर्ष में सांप्रदायिक रंग घुले।

Jayati Singh

* हिंसा व सांप्रदायिकता के कारण मापिला सबसे अलग हो गए, फिर सरकार ने दमन का रास्ता अपनाया। → 2337 मारे, 1652 घायल (सरकारी आंकड़े)
* Dec, 1921 तक विद्रोह पूरी तरह खत्म हो गया और मापिला इसके बाद आजादी की लड़ाई में कहीं शामिल नहीं हुए।

बारदोली सत्याग्रह →

1928 में लगान न देने

* बारदोली (सूरत) सत्याग्रह असहयोग आंदोलन की देन था।
* 1922 में असहयोग आंदोलन यहीं से शुरू होने वाला था।
* कल्याणजी और कुँवरजी मेहता (दोनों भाई) और दयालजी देसाई ने ही गाँधीजी को खेड़ा की बजाय बारदोली से असहयोग आंदोलन शुरू करने को मनाया था।
* इन्होंने बारदोली में बहिष्कार का प्रभावी आंदोलन छेड़ रखा था।
* इस क्षेत्र की दोनों बिरादरियाँ इन नेताओं की बहुत इज्जत करती थी।
  अनाविल ब्राह्मण व पट्टीदार
* इन्होंने आदिवासियों (कालिपराज) के बीच काम किया।
* कुँवरजी मेहता और केशवजी गणेशजी ने ~~आदिवासियों~~ 'कालिपराज साहित्य' का सृजन किया।
* 1927 के कालिपराज सम्मेलन की अध्यक्षता गाँधीजी ने की।
  गाँधीजी ने कालिपराज का नाम बदलकर रानीपराज रखा

समिति का गठन गाँधीजी ने किया

* नरहरि पारीख व जगतराम दवे ने इनके आर्थिक-सामाजिक पहलुओं का अध्ययन कर हाली पद्धति को अमानवीय बताया।
  बँधुआ मजूरी
* 1926 में लगान पुनरीक्षण अधिकारी ने लगान में 30 फीसदी बढ़ोतरी की सिफारिश की।
* कांग्रेस ने बारदोली जाँच समिति का गठन किया, जिसने इसे अनुचित बताया
* इसके बारे में सबसे पहले 'यंग इंडिया' ने लिखा और 'नवजीवन' ने
* खेडुत मंडल के माध्यम से किसान बैठके आयोजित हुई और उन्हें जिला कलेक्टर को याचिका भेजने की सलाह दी गई।

(5) Jyoti Singh

* 1927 में भीम भाई नाइक और शिवदासानी के नेतृत्व में किसान प्रतिनिधि-मंडल बम्बई राजस्व विभाग के प्रमुख अधिकारी (रेवेन्यू मेंबर) से मिला।
* विधान परिषद में मामला उठा और जुलाई 1927 को लगान 21.97% करा दि गई, इससे कोई संतुष्ट नहीं हुआ।
* कांग्रेस नेताओ ने वल्लभभाई पटेल को आंदोलन की रहनुमाई के लिए कहा।
* बारदोली सीमाग के बामनी गाँव में प्रतिनिधियों की बैठक में पटेल को औपचारिक रूप से आमंत्रित किया गया। → 60 गाँवों के
* निमंत्रण देने Jan, 1928 के आखिरी हफ्ते किसान समिति के सदस्य व स्थानीय नेता अहमदाबाद गए।
* 4 Feb. को पटेल बारदोली पहुँचे। → 5 Feb से लगान देना था
* पटेल किसानो को आंदोलन के नतीजे पर विचार करने का समय (1 हफ्ता) दे अहमदाबाद लौट गए।
* बम्बई के गवर्नर को खत लिख इसकी जाँच करने का अनुरोध किया।
* 12 Feb को बारदोली लौट कर ना अदा करने का निर्णय लिया।
  जब तक निष्पक्ष ट्रिब्यूनल का गठन नहीं करती या पहले के लगान को पूरा लगान ना मानती
* 'सरदार' की उपाधि बारदोली की औरतो ने दी।
* तालुके को 13 कार्यकर्ता शिविरों में बाँट एक-एक अनुभवी नेता तैनात किये गए। (छावनियों)
* इस आंदोलन की सेना थे 1500 स्वयंसेवी (ज्यादातर छात्र)
* एक प्रकाशन विभाग बनाया गया — बारदोली सत्याग्रह पत्रिका का प्रकाशन।
* खुफिया विभाग — कोई कर न दे रहा हो या सरकार क्या करने वाली है।
* महिलाओं को विशेषरूप से जागरूक किया गया।
* मीठूबेन पेटिट (बंबई की), भक्तिबा (दरबार गोपाल दास की पत्नी), मनीबेन पटेल (पटेल की बेटी), शारदाबेन शाह और शारदा मेहता को लगाया गया।
* लगान देनेवालो को सामाजिक बहिष्कार की धमकी दी गई।
* सरकारी अधिकारियों का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया।

Jayati Singh

* बम्बई विधान परिषद् के कई सदस्यों ने इस्तीफा दिया।
* 'सर्वेंट ऑफ इंडिया सोसाइटी' से कांग्रेस ने किसान की शिकायतों की जाँच करने का अनुरोध किया इसके बाद नरमपंथी भी समर्थक हो गए

रेल इकतरफा कार्रवाई — July 1928 को वाइसराय लार्ड इरविन ने गवर्नर विलसन को मामला रफा-दफा करने को कहा। → ब्रिटेन की संसद में मामला उठ चुका था

* 2 Aug, 1928 को गाँधीजी बारदोली पहुँचे। → पटेल की गिरफ्तारी होने पर आंदोलन संभालने
* सूरत के विधान परिषद् सदस्यों ने गवर्नर को लिखा "जाँच के लिए आपने जो शर्तें रखी है, वे मान ली जाएँगी। → शर्तें क्या थी जिक्र नहीं था
* ब्रूमफील्ड (न्यायिक अधिकारी) और मैक्सवेल (राजस्व अधिकारी) के जाँच पर लगान बढ़ोतरी घटाकर 6.03% कर दिया।

5 May, 1929 — न्यू स्टेट्समैन (लंदन) → "जाँच समिति की रिपोर्ट सरकार के मुँह पर तमाचा है — इसके परिणाम दूरगामी होंगे —।"

गाँधीजी → "बारदोली संघर्ष चाहे कुछ भी हो, यह स्वराज की प्राप्ति के लिए संघर्ष नहीं है। लेकिन इस तरह का हर संघर्ष, हर कोशिश हमें स्वराज के करीब पहुँचा रही है और हमें स्वराज की मंज़िल तक पहुँचाने में शायद ये संघर्ष सीधे स्वराज के लिए संघर्ष से कहीं ज्यादा सहायक सिद्ध हो सकते हैं"

(1) Gayatri Singh **CHAPTER–17** बिपिन चंद्र

(भारत का मजदूर वर्ग और राष्ट्रीय आंदोलन)

⇒ 19वीं शताब्दी के अंतिम दौर में राष्ट्रवादियों ने मजदूर वर्ग के आंदोलनों से अपना रिश्ता कायम करना शुरू किया।

* 1878 में सोराबजी शापूरजी बंगाली ने मजदूरों के काम में घंटे सीमित करने के लिए विधेयक रखने की कोशिश की। → बंबई विधान परिषद् में परंतु असफल रहे

* 1870 बंगाल के शशिपद बनर्जी ने मजदूरों का क्लब स्थापित किया। (ब्रह्मसमाजी समाजसेवी; 'भारत श्रमजीवी' पत्रिका निकाली)

* 1880 में नारायण मेघाजी लोखंडे ने 'दीनबंधु' साप्ताहिक पत्र निकाला (बंबई में; अंग्रेजी-मराठी)

→ और 1890 में 'बंबई मिल हैंड्स एसोसिएशन' शुरू किया।

* शुरू में राष्ट्रवादी नेताओं का रुख मजदूरों के सवाल पर काफ़ी उदासीन था।
  कारण →
  * साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन की शुरुआत में नहीं चाहते थे कि संघर्ष कमजोर हो।
  * नहीं चाहते थे कि भारतीय जनता विभाजित हो। → क्योंकि मालिक भी भारतीय थे

* काम की स्थितियों के बारे में सरकार द्वारा कानून बनाने को राष्ट्रीय अखबारों ने अस्वीकार किया। → भारतीय उत्पादकों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता

* 1881 तथा 1891 के फैक्टरी अधिनियम का विरोध किया। → उद्योगीकरण में खलल नहीं चाहते थे

(G.S. आगरकर के प्रभाव में) एक राष्ट्रवादी अखबार 'मराठा' ने मजदूरों का समर्थन किया तथा मिल-मालिकों से मजदूरों को रियायतें देने को कहा।

* ब्रिटिश मालिकों के होने पर मजदूरों का पूरा समर्थन किया राष्ट्रवादी नेताओं ने। → 1891 में कांग्रेस अध्यक्ष

* पी॰ आनंद चारलु का मानना था कांग्रेस के रुख में बदलाव का कारण था कि मालिक और एक ही देश के अभिन्न अंग नहीं थे।

* मजदूर वर्ग की पहली संगठित हड़ताल ब्रिटिश स्वामित्व व प्रबंध वाली रेलों में हुई।

Yayati Singh

(2)

* ग्रेट इंडिया पेनिन्सुलार (GIP) रेलवे में 1899 में सिग्नल पर काम करने वाले ने हड़ताल की। → काम के घंटों व अन्य सेवा शर्तों से संबद्ध
* मराठा तथा केसरी ने इसका समर्थन किया। → तिलक द्वारा प्रकाशित
* फ़िरोज़शाह मेहता, डी॰ ई॰ वाच्छा और सुरेंद्रनाथ टैगोर ने बंगाल व बंबई में जनसभाएँ कीं व कोष इकट्ठा किया। → हड़तालियों के मदद के लिए
* 1903 में जी॰ सुब्रमण्य अय्यर ने मजदूरों को आपस में मिलकर संगठित होना चाहिए।

⇒ 1903-08 की दो मुख्य विशेषताएँ थी — ① व्यावसायिक (पेशेवर) आंदोलनकारियों का आविर्भाव ② औद्योगिक हड़तालों में 'श्रमिकों के संगठन की शक्ति'।

* स्वदेशी आंदोलन के 4 बड़े नेता — अश्विनी कुमार दत्त, प्रभात कुमार रायचौधरी, प्रेमतोष बोस और अपूर्वकुमार घोष ने श्रमिक संगठनों के लिए खुद को समर्पित किया। → सबसे बड़ी सफलता
* सरकारी प्रेस में काम करने वाले मजदूरों, रेलवे तथा जूट उद्योग में लगे मजदूरों को संगठित किया। → विदेशी पूँजी या उपनिवेशवादी वर्ग द्वारा संचालित
* स्वदेशी आंदोलन के दौर की विशेषता थी —
  * मजदूरों के आंदोलन में राजनीतिक मुद्दे भी शामिल हो गए।
  * राष्ट्रवादी नेताओं के समर्थन से संगठित हड़ताल होने लगे।
* बंगाल विभाजन (16 Oct 1905) के दिन बंगाल के मजदूरों ने भी हड़ताल किया
* हावड़ा के बर्न कंपनी के शिपयार्ड में मजदूरों ने हड़ताल किया। स्वदेशी नेताओं के फेडरेशन हाल की सभा में जाने की छुट्टी नहीं दी (कलकत्ता)
* Feb - March 1908 में सूती मिल में सुब्रमण्य शिव ने हड़ताल के पक्ष में अभियान चलाया। → तमिलनाडु की तूतिकोरिन में विदेशी स्वामित्व वाली
* शिव तथा स्वदेशी नेता चिदंबरम पिल्लै को गिरफ्तार किया गया तो हड़ताल हुई।
* 1907 में लाला लाजपतराय और अजीत सिंह को निर्वासित किया गया जिसकारण रावलपिंडी (पंजाब) में हथियार गोदाम तथा रेलवे के इंजीनियरिंग विभाग के मजदूरों ने हड़ताल की।

(8) Jayati Singh

* रूस के प्रभावशाली राजनीतिक विरोध प्रदर्शन के रूप में मजदूरों का आंदोलन ने भारतीय मजदूरों को प्रभावित किया।
* 1908 में मजदूर आंदोलन में शिथिलता आई।
⇒ 1919 – 1922 के बीच मजदूर आंदोलन दुबारा उठा।
* मजदूर वर्ग ने निजी अखिल भारतीय स्तर का संगठन बनाया। (वर्गीय अधिकारों की रक्षा के लिए)
* मजदूर वर्ग राष्ट्रीय आंदोलन में काफी हद तक शामिल हुआ।
* 1920 में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एटक) की स्थापना हुई।
* बम्बई के मजदूरों के साथ तिलक के काफी नज़दीकी संबंध थे। (प्रेरित किया)
* लाला लाजपतराय पहले अध्यक्ष और दीवान चमन लाल महामंत्री बने।
* अपने अध्यक्षीय भाषण में लालाजपतराय ने भारतीय श्रमिकों को राष्ट्रीय स्तर पर संगठित होने की बात कही।
* एटक ने जो घोषणापत्र जारी किया उसमें राष्ट्रीय राजनीति में हस्तक्षेप की बात भी कही गई।
* लाला लाजपत राय पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पूँजीवाद को साम्राज्यवाद से जोड़कर देखा।
* एटक के दूसरे सम्मेलन में दीवान चमनलाल ने कहा स्वराज पूँजीपतियों के लिए नहीं, मजदूरों के लिए होगा।
* तीसरे व चौथे अधिवेशन की अध्यक्षता चितरंजन दास ने की।
* अन्य में – सी० एफ० एंड्रूज, जे० एम० सेनगुप्त, सुभाषचंद्र बोस, जवाहर लाल नेहरू और सत्यमूर्ति थे। → एटक से संबंधित।
* 1922 के गया अधिवेशन में कांग्रेस ने एटक के बनने का स्वागत किया व काम में मदद के लिए एक समिति बनाई। → कांग्रेस के नेता शामिल थे
* गया कांग्रेस के अध्यक्षीय भाषण में चितरंजन दास ने कहा – "मजदूरों और किसानों को कांग्रेस को अपने हाथ में ले लेना चाहिए।"
* पंजाब में दमन और गाँधीजी की गिरफ्तारी के बाद 1919 में गुजरात (अहमदाबाद) मजदूर वर्ग ने हड़ताल कर दी।
  ↓ 28 मरे, 123 घायल हुए

(4)

Jayati Singh

* आजपत जत्था ने दिखाया रेल कर्मचारियों के लिए गाँधीजी उपनिवेशवादी शासन व शोषण के प्रति प्रतिरोध के प्रतीक बन गए।

* Nov. 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन पर संपूर्ण देश में मजदूरों ने हड़ताल किया।

* 1918 में अहमदाबाद में अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन (TLA) की स्थापना गाँधीजी ने कि। → सबसे बड़ी ट्रेड यूनियन सदस्य - 14,000

* टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन ने 1918 में एक विवाद के दौरान मजदूरी में 27.5% बढ़ोतरी कराई।

गाँधीजी → "मिलों के वे ही असली मालिक हैं और यदि ट्रस्टी यानी मिल-मालिक वास्तविक मालिक के हितों के लिए श्रम नहीं करता है, तो मजदूरों को अपने अधिकार पाने के लिए सत्याग्रह करना चाहिए।"

जे० बी० कृपलानी → "ट्रस्टी पद का अर्थ ही यह है कि वह मालिक नहीं है। इसका मालिक वह है जिसके हितों की रक्षा के लिए उसे जिम्मेदारी दी गई है।"

1922 के बाद मजदूर वर्ग के आंदोलन में शिथिलता आई।

⟹ 1927 के शुरू में देश के अलग-अलग भागों में विभिन्न कम्युनिस्ट दलों ने अपने को वर्कर्स एंड पीजेंट्स पार्टी के रूप में संगठित किया। WPP. कामगारों और किसानों की पार्टी

* इसके नेता— श्रीपाद अमृत डांगे, मुजफ्फर अहमद, पूरनचन्द जोशी तथा सोहन सिंह जोश।

* कामगार किसान पार्टी कांग्रेस के अंदर वामपंथी ग्रुप के रूप में काम करती थी।

* ट्रेड यूनियन आंदोलन में कम्युनिस्टों का असर 1928 के अंत तक काफी अधिक शक्तिशाली हो गया।

* बंबई के सूती मिलों के मजदूरों ने 6 महीने की हड़ताल की जिसके बाद कम्युनिस्टों के नेतृत्व वाली गिरनी कामगार यूनियन ने महत्वपूर्ण स्थिति हासिल कर ली। → April - Sept 1928

(5)

Jayati Singh

* 'एटक' की अध्यक्षता जब जवाहरलाल नेहरू कर रहे थे, एन० एम० जोशी के नेतृत्व में कुछ लोग इससे अलग हो गए।
  - मजदूर आंदोलन में अर्थवाद (इकोनोमिज़्म) की प्रवृत्ति शुरू हुई।

Nov, 1927 में 'एटक' ने साइमन कमीशन के बहिष्कार का निर्णय लिया।

* सरकार ने मजदूर आंदोलन पर दुतरफा आक्रमण किया —
  (1) दमनकारी कानून बनाए (पब्लिक सेफ्टी ऐक्ट तथा ट्रेड डिस्प्यूट ऐक्ट) तथा क्रांतिकारी नेताओं को गिरफ्तार कर षड्यंत्र का मुकदमा चलाया।
  मेरठ षड्यंत्र केस
  (2) कुछ रियायतें दे कर आंदोलन को तोड़ने की कोशिश की।
* 1928 में कम्युनिस्टों ने राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्यधारा से जोड़ने और इसके भीतर रहकर काम करने की नीति बदल दी, तो राष्ट्रीय आंदोलन से अलग-थलग पड़ गए।
* एटक के भीतर भी यह अलग-थलग पड़ गए तथा 1931 में उनको निकाल दिया गया। → विभाजन
* सविनय अवज्ञा आंदोलन में देशभर में मजदूरों ने हिस्सा लिया।
* 7 और 16 May के बीच शोलापुर में पुलिस ने ब्रिटिश विरोधी जुलूस को रोकने के लिए गोली चलाई, सूती मिल मजदूर हिंसा पर उतारू हो गए।
* सरकार ने मार्शल लॉ की घोषणा की व कुछ मजदूरों को फाँसी दी गई।
* सविनय अवज्ञा आंदोलन में काँग्रेस (बंबई) का नारा — "मजदूर और किसान काँग्रेस के हाथ-पाँव हैं।"
* 1930 में 4 Feb को 20,000 मजदूरों (अधिकांश G.I.P रेलवे के) ने काम बंद कर दिया, बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियों के प्रति विरोध जताने के लिए काँग्रेस कार्यकारिणी ने 6 July को 'गाँधी दिवस' घोषित किया।

⇒ 1932-34 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में मजदूरों ने हिस्सा नहीं लिया।

* 1934 तक साम्यवादी फिर से राष्ट्रवादी राजनीति की मुख्यधारा में आए।
* 1935 में वे 'एटक' में मिल गए।
* वामपंथी प्रभाव तेजी से फिर से बढ़ना शुरू हो गया।

(6)

Jayati Singh

* 1937 में कांग्रेस के चुनावी घोषणापत्र में लिखा कि कांग्रेस श्रमिकों के झगड़ों को निपटाने के लिए कदम उठाएगी तथा उनके यूनियन बनाने एवं हड़ताल करने के अधिकार की सुरक्षा के उपाय करेगी।
* इस काल में हुई हड़तालें अधिकांशतः सफलतापूर्वक समाप्त हुईं।

⇒ 2 Oct 1939 को बंबई के मजदूरों ने हड़ताल किया।

* साम्यवादियों ने तर्क दिया युद्ध साम्राज्यवादी युद्ध से जनता के युद्ध में बदल गया है, तो मजदूर फासीवाद को हटाने में मित्रराष्ट्रों का समर्थन करें।
* साम्यवादी दल ने Aug 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन से खुद को अलग किया पर भारत छोड़ो आंदोलन में मजदूर शामिल हुए।
* 9 Aug 1942 को गाँधीजी व अन्य के गिरफ्तारी के बाद देशभर में मजदूरों ने हड़तालें की → लगभग एक सप्ताह तक
* टाटा स्टील प्लांट 13 दिन व अहमदाबाद सूती कपड़ा मिल साढ़े तीन महीने हड़ताल पर रही।

⇒ 1945 - 47 के दौरान मजदूरों की गतिविधियाँ फिर शुरू हुईं।

* 1945 की समाप्ति तक गोदी मजदूरों सेना की रसद को इंडोनेशिया तक पहुँचाने वाले जहाजों पर माल लादने से इंकार किया → बंबई & कलकत्ता
दo-पूo एशिया के राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम का दमन होता
* 1946 में नौसैनिकों के समर्थन में बंबई मजदूरों ने हड़ताल किया।
* 22 Feb को साम्यवादियों व समाजवादियों के कहने पर 200 से 300 मजदूरों ने हड़ताल की।
* सेना की 2 टुकड़ियाँ आई 250 आंदोलनकारी मारे गए।
* अंतिम वर्षों में आर्थिक मुद्दों को ले हड़ताल हुई → डाक विभाग के कर्मचारी का हड़ताल अधिक विख्यात
युद्ध काल में आर्थिक शिकायतों पर बंधन लागू था
* युद्ध के समाप्त होने के बाद कीमतों का बढ़ना जारी रहा, जिससे मजदूर वर्ग की सहनशक्ति खत्म होने लगी।
* फिर भी मजदूर संघर्ष में शामिल थे क्योंकि उनको उम्मीद थी कि "स्वतंत्रता मिलने पर यह चीजें उन्हें अधिकार के रूप में मिलेंगी।"

Jagat Singh

CHAPTER – 18

बिपिन चंद्र

① (गुरुद्वारा सुधार व मंदिर प्रवेश आंदोलन)

* समाजसुधार के लिए किए आंदोलन साम्राज्य-विरोधी आंदोलन में घुल - मिल गया।

⇒ अकाली आंदोलन →

* धार्मिक मुद्दों को लेकर शुरुआत हुई और अंत भारतीय संग्राम की एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में हुई।
* 1920 – 1925 के बीच 30 हजार जेल गए, 400 मारे गए 2000 घायल
* मूल मकसद गुरुद्वारों को भ्रष्ट महंतों के चंगुल से मुक्त कराना था।
* महाराजा रणजीत सिंह व अन्य ने 18 - 19वीं सदी में गुरुद्वारों को लगान मुक्त जमीन व पैसे दिए।
* 18वीं सदी में गुरुद्वारों का प्रबंध उदासी सिख महंतों के हाथ चला गया (लंबे बाल व दाढ़ी नहीं रखते थे)
* चढ़ावे व उसकी संपत्ति को इन्होंने (महंतों ने) निजी मिल्कियत मान ली। 1849 में पंजाब पर अंग्रेजों के कब्जे के बाद उनकी भी दखलंदाजी होने लगी।
* महंत व प्रबंधक (अंग्रेजों द्वारा नामजद) सिखों को अंग्रेजी हुकूमत के प्रति वफादारी का पाठ पढ़ाया।
* सुधारवादी सिख और राष्ट्रवादी को दो घटनाओं से धक्का लगा —
  ① स्वर्णमंदिर के ग्रंथियों ने गदर आंदोलनकारियों के खिलाफ हुक्मनामा जारी किया और उन्हें विधर्मी घोषित किया
  ② ग्रंथियों ने जनरल डायर को सरोपा भेंट कर सिख घोषित किया
* स्वयंसेवकों को संगठित कर छोटे-छोटे गुट बना "जत्था" नाम दिया।
* माँग थी गुरुद्वारों का प्रबंध स्थानीय भक्तों को सौंपा जाए
* साल भर के भीतर गुरुद्वारों पर से महंतों का नियंत्रण खत्म हो गया
* इसके बाद स्वर्णमंदिर और अकाल तख्त का मुद्दा उठा। (धर्मस्थल का प्रबंध सिख प्रतिनिधियों को सौंपा जाए)

Jayanti Singh

* सरकार ने प्रबंधक से इस्तीफा देने को कहा और स्वर्णमंदिर का प्रबंध सुधारवादियों को दिया गया।
* Nov, 1920 में "शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति" का गठन हुआ। नई प्रबंध व्यवस्था के लिए 10 हजार सुधारवादियों द्वारा
* अन्य माँगो के आंदोलन चलाने के लिए "शिरोमणि अकाली दल" का गठन हुआ। Dec में शीर्ष थे जाट किसान
* नेतृत्व राष्ट्रवादी बुद्धिजीवियों के हाथ था। → तमाम नेता असहयोग आंदोलन से भी जुड़े थे
* अकाली दल व शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक समिति का सिद्धांत → अहिंसा था।
* Feb, 1921 में ननकाना (→ गुरुनानक का जन्मस्थान) में अकाली आंदोलन में हिंसा हुई पहली बार। → गुरुद्वारे के महंत नारायण दास द्वारा गुरुद्वारे पर नियंत्रण हेतु
* करतार सिंह झब्बर के नेतृत्व में अकालियों ने गुरुद्वारे पर नियंत्रण कर लिया। → पुलिस महंत को गिरफ्तार कर चुकी थी

करतार सिंह झब्बर → "ननकाना कांड ने सिखों को जगा दिया और स्वराज के लिए 'मार्च' और तेज हो गया।" → गांधीजी, मौलाना शौकत अली, लाजपतराय ने समर्थन किया

* सरकार ने दोहरी नीति अपनाई।
* नरमपंथी के साथ समझौता और गरमपंथी का दमन।
* अकालियों ने धर्मस्थल को सरकारी दखलंदाजी से मुक्त करने का संघर्ष छेड़ा।
* 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति' ने असहयोग आंदोलन को मंजूरी दी।
* 'प्रिंस ऑफ वेल्स' के भारत आगमन के दिन "शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति" ने सिखों को हड़ताल मनाने को कहा।
* अनेक राष्ट्रवादी नेताओं को गिरफ्तार किया गया। बाबा खड़ग सिंह और मास्टर तारा सिंह
* गिरफ्तार लोगों को छोड़ कर चाबियाँ (तोशाखाना की) बाबा खड़ग सिंह को सौंप दी गई। → सरकार स्वर्णमंदिर के तोशाखाना की चाबियाँ अपने पास रखना चाहती थी

समिति के अध्यक्ष

(2) Jayanti Singh

महात्मा गाँधी → "हिंदुस्तान की आजादी की पहली लड़ाई जीत ली गई, बधाई।" – बाबा खड़गसिंह को तार भेजकर

* गुरुद्वारा मुक्ति आंदोलन का चरमोत्कर्ष था गुरु का बाग संघर्ष।

अमृतसर से 20 km दूर द्योकेवाला गाँव में गुरुद्वारा

1921 में समीति को सौंप देने के बाद महंत ने जमीन पर कब्जा रखा। वहाँ से पेड़ काटने के कारण 9 Aug 1922 को 5 अकालियों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने चोरी और दंगा का आरोप लगा 28 Aug तक 4000 गिरफ्तार हुए। बाद में गिरफ्तार न कर तब तक पीटा जाता जबतक बेहोश न होते। C.F. एंड्रयूज ने इसे अमानवीय, वहशी, कायरतापूर्ण, अंग्रेजों के लिए शर्मनाक व ब्रिटेन की नैतिक पराजय की संज्ञा दी।

* 10 Sept. * स्वामी श्रद्धानंद, हकीम अजमल खाँ * अकालियों की सभा में भाग लिया

सेवानिवृत सरकारी अधिकारी के माध्यम से जमीन को पट्टे पर ले सरकार ने उसे अकालियो को दे दिया और अकाली रिहा किए गए।

* Sept. 1923 में अकालियों ने 'नाभा' के महाराज का मामला उठाया परंतु धर्म से संबंधित न होने के कारण सफलता नहीं मिली। → सरकार ने बेदखल कर दिया था

* मशहूर जैतू (नाभा) मोरचा इसी से संबंधित है।

* 1925 में सुधारवादी कानून बना गुरुद्वारों का प्रबंध सिखों के निर्वाचित समिति को सौंपा गया। इसका नाम भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति रखा गया

अकाली आंदोलन के इतिहासकार मोहिंदर सिंह → विदेशी हुकूमत से देश को आज़ाद करने की भावना ने ही पंजाब सूबे के सिखों, हिन्दुओं और मुसलमानों को अकाली आंदोलन के झंडे तले एकताबद्ध किया।

⇒ छुआछूत के खिलाफ →

* 1917 में कांग्रेस ने प्रस्ताव पारित कर इसे खत्म करने की अपील की।
* गाँधीजी पहले नेता थे जिन्होंने इसके खिलाफ आवाज़ उठाई।
* केरल में दो महत्वपूर्ण घटना हुई —

(1) वायकोम सत्याग्रह → केरल में

* एझवा और पुलैया अछूत जातियों को सवर्णों से क्रमश: 16 और 32 फुट की दूरी बनाए रखनी पड़ती थी।
* 19वीं सदी की अंत के समय से संघर्ष होता रहा। → नारायण गुरु, N. कुमारन एवं T.K. माधवन शामिल थे

(4) Jayati Singh

* काकिनाडा सम्मेलन के बाद "केरल प्रदेश कमेटी" ने छुआछूत को महत्वपूर्ण मुद्दा बनाया।
* वायकोम (त्रावनकोर का गाँव) में मंदिर के चारों ओर मंदिर की सड़कों पर अवर्ण नहीं चल सकते थे।
* 30 March, 1924 को काँग्रेसियों के नेतृत्व में सवर्णों और अवर्णों का जुलूस मंदिर पहुँच गया।
* सवर्णों के संगठन "नायर सर्विस सोसाइटी" "नायर समाजम" व "केरल हिंदू सभा" ने इस सत्याग्रह का समर्थन किया।
* नंबूदरियों के सबसे बड़े संगठन 'योगक्षेम सभा' ने समर्थन किया। (सर्वोच्च ब्राह्मण जाति)
* 30 March को K. P. केसवमेनन के नेतृत्व में सत्याग्रहियों ने मंदिर की ओर कूच किया, उन्हे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। (मजिस्ट्रेट ने निषेधाज्ञा लगाई थी)
* ई॰ वी॰ रामास्वामी नायकर मदुरै से नेतृत्व किया, जेल गए। बाद में पेरियार नाम से मशहूर हुए
* प्रतिक्रियावादी हिंदुओ ने इन सबो का बहिष्कार किया।
* Aug 1924 में महाराजा की मौत के बाद महारानी ने सत्याग्रहियों को रिहा कर दिया।
* 31 Oct को मंदिर की सड़के सबके लिए खोलने की माँग लेकर महारानी के पास पैदल त्रिवेंद्रम एक जत्था गया, नामंजूर कर दिया
* March, 1924 में गाँधी ने केरल का दौरा किया।
* अंततः एक समझौता कर सड़के खोल दी गई, मंदिर में प्रवेश वर्जित था। → अवर्णों के लिए
* गाँधीजी भी केरल में किसी मंदिर में नहीं गए।

(2) गुरुवायूर सत्याग्रह →

* K. केलप्पन के उकसाने पर केरल काँग्रेस कमेटी ने 1931 में मंदिर प्रवेश का सवाल फिर उठाया।
* 1 Nov. 1931 को गुरुवायूर में मंदिर प्रवेश सत्याग्रह छेड़ने का निर्णय हुआ। - केरल प्रदेश काँग्रेस कमेटी द्वारा

Jayati Singh

(5)

* पीत सुब्रमण्यम तिरुमाबु के नेतृत्व में 16 स्वयंसेवकों का एक जत्था 21 Oct को कान्नापुर से गुरुवायूर की ओर पैदल गया।
* 1 Nov को अखिल केरल मंदिर प्रवेश दिवस मनाया गया।
* दर्शनार्थियों ने चढ़ावे को पुजारी के बजाय सत्याग्रहियों को दिया।
* महंतों व पुजारियों ने मंदिर के चारों ओर कंटीले तार लगाए तथा पहरेदार तैनात किए तथा सत्याग्रहियों को मारने-पीटने की धमकी दी।
* 1 Nov को 16 सत्याग्रहियों ने पूर्वी प्रवेशद्वार की ओर मार्च किया।
* प्रतिक्रियावादी लोगों ने सत्याग्रहियों पर हमला किया।
* पी॰ कृष्ण पिल्लै व ए॰ के॰ गोपालन को बुरी तरह पीटा गया।
बाद में केरल में कम्युनिस्ट आंदोलन के नेता हुए
* Jan, 1932 में असहयोग आंदोलन शुरू हुआ, नेता जेल में डाले गए।
* 21 Sept 1932 को के॰ केलप्पन आमरन अनशन पर बैठे।
* कालीकट के ज़ामोरिन से मंदिरों को हरिजनों व दलितों के लिए खोलने की अपील कि गई, जिसका कोई असर न पड़ा।
* गाँधीजी के आश्वासन पर 2 Oct, 1932 को अनशन तोड़ा।
खुद संघर्ष चलाएंगे
* N.K. गोपालन के नेतृत्व में एक जत्थे ने केरल में पदयात्रा की।
* 1000 मील की यात्रा 500 सभाएँ हुए। जनमत तैयार करने हेतु
* मंदिर नहीं खुला पर कई सफलताएँ मिली।
* Nov, 1936 में त्रावनकोर के महाराजा ने आदेश जारी कर सरकार नियंत्रित सभी मंदिरों को हिंदुओं की सभी जातियों के लिए खोलदिया।
* 1938 में मद्रास में C. राजगोपालाचारी के नेतृत्व वाले मंत्रिमंडल ने भी ऐसा ही किया। कांग्रेस शासित अन्य प्रांतों में भी यही हुआ।
* इस आंदोलन की सबसे बड़ी कमी यह थी कि इसने छुआछूत के लिए जनता को उद्वेलित किया पर जाति प्रथा के खिलाफ आंदोलन नहीं छेड़ा।

विपिन चंद्र

(1) Jayati Singh

CHAPTER – 19

(राष्ट्रीय आंदोलन में ठहराव के वर्ष)

* Feb 1922 में असहयोग आंदोलन वापस ले लेने के बाद राष्ट्रवादी खेमे में बिखराव आने लगा।
* सी० आर० दास और मोतीलाल नेहरू ने विधान परिषद् का बहिष्कार बंद कर इनका सदस्य बनने इसका पर्दाफाश करने का सुझाव दिया।
* तर्क → यह युक्ति असहयोग आंदोलन का परित्याग नहीं बल्कि उसे और प्रभावी बनाने की रणनीति है। यह संघर्ष में एक नया मोर्चा साबित होगी। → C.R.दास कांग्रेस के अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू महामंत्री थे
* गया कांग्रेस अधिवेशन (Dec 1922) में इसका प्रस्ताव रखा गया जिसका वल्लभभाई पटेल, राजेन्द्र प्रसाद और सी० राजगोपालाचारी ने विरोध किया
  पक्ष – 890 मत, विरोध – 1748
* C.R. दास व मोतीलाल नेहरू ने इस्तीफा दे 1 Jan 1923 को "कांग्रेस खिलाफत स्वराज पार्टी" की स्थापना की। बाद में स्वराज पार्टी के नाम से मशहूर
* विधान परिषद् में हिस्सा लेने के समर्थकों को 'प्रो चेंजर्स' (परिवर्तन समर्थक) तथा विरोधियों को 'नो चेंजर्स' (परिवर्तन विरोधी) की संज्ञा दी गई।
* स्वराजियों का दावा → इनका मकसद विधानमंडल को राजनीतिक संघर्ष का मंच बनाना है।
* 'नो चेंजर्स' का तर्क था कि जो लोग विधान परिषद् में जाएंगे, वे धीरे-धीरे प्रतिरोध की राजनीति छोड़ साम्राज्यवादी हुकूमत का साथ देंगे।
* दोनों खेमों में झगड़ा बढ़ने लगा और 1907 की घटना (सूरत में कांग्रेस विभाजन) की पुनरावृत्ति की आशंका बढ़ने लगी।
* दोनों खेमों ने समझौतावादी रुख अपना लिया।
* कारण → संसद के बाहर जनांदोलन की आवश्यकता को महसूस किया गया और दोनों खेमे गाँधीजी के नेतृत्व को मानते थे।
* Sept. 1923 में दिल्ली कांग्रेस विशेष अधिवेशन में विधान परिषद् में प्रवेश का विरोध बंद करने का निश्चय हुआ।

Jayoti Singh

(2)

* 5 Feb, 1924 को गाँधीजी रिहा हुए। → स्वास्थ्य की खराबी के आधार पर
* गाँधीजी विधान परिषदों का सदस्य बनने और उसकी कार्यवाही में बाधा पहुँचाने की नीति के विरोधी थे।
* गाँधीजी को रिहा करते समय उन्हें स्वराजियों की निंदा करने का सुझाव दिया

भारतीय गृह सचिव को — वाइसराय (6 June 1924) → "स्वराजियों और गाँधीजी में अलगाव की संभावनाएँ बढ़ती जा रही हैं और स्वराजी इस समय कांग्रेस पर गाँधीजी के नियंत्रण को तोड़ने में जी-जान से जुटे हैं।"

* गाँधीजी ने ~~स्वराजियों~~ स्वराजियों को 'सुयोग्य, अनुभवी एवं ईमानदार देशभक्त' की संज्ञा दी।

* 25 Oct, 1924 को सरकार ने अध्यादेश जारी किया जिसके तहत (आतंकवाद से निबटने के नाम पर) कांग्रेस-कार्यालयों और नेताओं के घरों में छापे मार नेताओं को गिरफ्तार किया गया। → सुभाष चंद्र बोस, अनिल बरन राय व S.C. मित्र भी शामिल थे
(बंगाल विधानमंडल के स्वराजी विधायक)

* (यंग इंडिया में गिरफ्तारी के विरोध में) गाँधीजी (31 Oct 1924) → "रौलेट ऐक्ट तो मर चुका, पर जिन मनोभावनाओं के चलते इसे लाया गया था, वे आज भी जिंदा हैं। जब तक अंग्रेजों के हित भारतीयों के हित से टकराते रहेंगे, रौलेट ऐक्ट कोई-न-कोई रूप धारण करता ही रहेगा।"

* 6 Nov, 1924 को C.R. दास, मोतीलाल नेहरू और गाँधीजी ने एक संयुक्त बयान पर हस्ताक्षर किया जिसमें कहा गया — स्वराजी नेता कांग्रेस के अभिन्न अंग के रूप में, कांग्रेस के नेतृत्व में, विधानमंडल में अपना काम करते रहेंगे। → Dec में बेलगाँव अधिवेशन में इसे मंजूरी दी गई
अध्यक्ष - गाँधीजी

* Nov, 1926 में विधान परिषद् चुनाव हुए।
* घोषणापत्र (14 Oct) में स्वराजियों ने साम्राज्यवाद विरोध को प्रमुख मुद्दा बनाया।
* सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली की 101 निर्वाचित सीटों में 42 पर इनकी जीत हुई।

Jayati Singh

(3)

* मध्यप्रांत में स्पष्ट बहुमत, बंगाल में सबसे बड़ा दल बना।
* बंबई तथा उ० प्र० में अच्छी सफलता परंतु मद्रास व पंजाब में खास सफलता नहीं मिली। कारण → जातिवाद व सांप्रदायिकता
* सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली में स्वराजियों ने साझा राजनीतिक मोर्चा बनाया जिसमें मदनमोहन मालवीय भी शामिल थे। (जिन्ना व समर्थक भी थे)
व्यक्तिगत रूप से विधायक
* विधानमंडल के अधिसंख्य सदस्य निर्वाचित थे पर केन्द्र में / सूबों में कार्यपालिका पर इनका नियंत्रण नहीं था। → कार्यपालिका ब्रिटेनी हुकूमत के प्रति उत्तरदायी थी
* वाइसराय या गवर्नर किसी भी कानून को मंजूरी का प्रमाणपत्र दे सकते थे।
* 1925 में विट्ठल भाई पटेल को सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली का अध्यक्ष बनवाने में कामयाब हुए।
* तीन मुद्दों को जोरदार ढंग से उठाया गया —
① स्वशासन की स्थापना के लिए संविधान में परिवर्तन
② नागरिक स्वतंत्रता की बहाली — राजनीतिक बंदियों की रिहाई व दमनकारी कानून की समाप्ति
③ देशी उद्योगों का विकास

विट्ठलभाई पटेल → हम चाहते हैं कि आप अपना प्रशासन 'बीटो' से और हर पराजित विधेयक को वैधता का प्रमाणपत्र देकर चलाएँ। हम चाहते हैं कि आप 'गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ऐक्ट' को रद्दी कागज समझें।

C.S. रंगा अय्यर → 'सरकारी अधिकारी वृंद अपराधी हैं, हत्यारे हैं। ये वे लोग हैं, जो स्वतंत्रता को प्यार करने वाली जनता की स्वतंत्रता की हत्या कर रहे हैं।"

लाला लाजपतराय → क्रांतियाँ और क्रांतिकारी आंदोलन तो सामाजिक सच्चाईयाँ हैं, इसके बिना समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता।

C.R. दास → दमन स्वेच्छाचारी शासन को मजबूत बनाने का साधन है। (बंगाल प्रांतीय सम्मेलन में)

(4) Jayoti Singh

* 1923-24 के दौरान नगरपालिकाओं और स्थानीय निकायों पर काँग्रेस का कब्जा हो गया।
* C.R. दास कलकत्ता के मेयर — सुभाषचंद्र बोस मुख्य अधिशासी अधिकारी
* विट्ठल भाई पटेल अहमदाबाद नगरपालिका के व राजेंद्र प्रसाद पटना नगर पालिका के और जवाहरलाल नेहरू इलाहाबाद नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गए। → नो चेंजर्स ने भी हिस्सा लिया
* अधिकार सीमित होने के बावजूद काफी काम किया। → शिक्षा, सफाई, छुआछूत निवारण, स्वास्थ्य व खादी प्रचार में
* 16 June, 1925 को C.R. दास का निधन हो गया।
* राष्ट्रवादी खेमे में सरकार फूट डालने की कोशिश करती रही।
* स्वराज पार्टी पार्टी में ऐसे लोग घुस गए जो सत्ता में पद चाहते थे और सुधारों के समर्थक थे।
* मध्यप्रांत में यह सरकार में शामिल हो गए। — M.C. केलकर, M.R. जयकर व अन्य ने इनका साथ दिया।
* लालालाजपतराय और मदनमोहन मालवीय ने सत्ता में साझेदारी व सांप्रदायिकता के मुद्दे पर स्वराज पार्टी छोड़ दी।
* पार्टी को बचाने हेतु पार्टी नेतृत्व ने 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' में अपनी आस्था दोहराई और March 1926 में विधानमंडल में हिस्सा न लेने का फैसला किया।
* Nov. 1926 में स्वराज पार्टी ने चुनाव में हिस्सा लिया पर खास सफलता नहीं मिली।
* हिंदू और मुसलिम सांप्रदायिकता इनके लिए चुनौती बनी हुई थी।
* स्वराजी कई बार स्थगन प्रस्ताव लाने में कामयाब हुए।
* 1928 में सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक पर सरकार पराजित हुई। इसका विरोध सभी राष्ट्रवादी ने किया
* मोतीलाल नेहरू ने इसे "भारतीय राष्ट्रवाद और भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस पर सीधा हमला" कहा।
* इस विधेयक को "भारतीय गुलामी विधेयक नं० 1" की संज्ञा दी।

Jayati Singh

(5)

* विधेयक पारित न होने पर क्रोधित सरकार ने March 1929 को 31 बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। → कम्युनिस्ट, मजदूर व वामपंथी नेता
* मेरठ में मुकदमा चलाया गया।
* गाँधीजी ने इसे "कानून की आड़ में अराजकता का नंगा नाच" कहा।
* लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में पारित प्रस्तावों व सविनय अवज्ञा आन्दोलन छिड़ने के कारण 1930 में स्वराजियों ने इस्तीफा दिया।
* इसकी सफलता यह थी कि राजनीतिक गतिविधियों को जारी रखा।
* स्वराजियों ने सुधार अधिनियम (1919) की कलई खोली।
* नो चेंजर्स इस दौरान रचनात्मक कार्यों में जुटे रहे।
* बारदोली तालुका (गुजरात) में वेदची आश्रम में चिमनलाल मेहता, जगतराम दवे और चिमनलाल भट्ट ने आदिवासियों को शिक्षित किया।
* रचनात्मक कार्य स्वाधीनता संघर्ष के लिए सिपाही तैयार करने और उन्हें प्रशिक्षित करने में मददगार साबित हुए।

दोनों खेमों में आंतरिक कलह के कारण ← गाँधीजी (May 1927) → "मैं तो अब केवल प्रार्थना में ही विश्वास रखता हूँ।"

① Jayoti Singh

बिपिन चंद्र

CHAPTER-20

(भगत सिंह, सूर्य सेन और क्रांतिकारी आतंकवादी)

* 1920 के शुरू में क्रांतिकारी आतंकवादियों को आम माफी के तहत जेल से रिहा किया गया।

* गाँधीजी, C.R.दास की अपील पर वह आतंकवाद का रास्ता छोड़ असहयोग आंदोलन में शामिल हुए, पर आंदोलन वापस ले लिए जाने के कारण वह हिंसात्मक तरीके इस्तेमाल करने लगे।

* क्रांतिकारी आतंकवाद की 2 धारा — ① पंजाब, U.P & Bihar ② बंगाल में
रूसी क्रांति युवा क्रांतिकारियों के लिए प्रेरणादायक थी व वह "बोलशेविक पार्टी" से मदद लेने के इच्छुक थे।

* साम्यवादी समूहों ने भी युवा क्रांतिकारियों को प्रभावित किया।

उत्तर भारत के क्रांतिकारी — मार्क्सवाद, समाजवाद और सर्वहारा सिद्धांत के प्रचारक रामप्रसाद बिस्मिल, योगेश चटर्जी और शचींद्रनाथ सान्याल के नेतृत्व में क्रांतिकारी संगठित हुए।

* बंदी जीवन (लेखक - शचींद्रनाथ सान्याल) क्रांतिकारी आंदोलन की पाठ्य पुस्तक

* Oct 1924 में "हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन" (अथवा सेना) का गठन हुआ। क्रांतिकारी युवाओं के कानपुर सम्मेलन में
उद्देश्य — सशस्त्र क्रांति के माध्यम से औपनिवेशिक सत्ता उखाड़ एक संघीय गणतंत्र 'संयुक्त राज्य भारत' की स्थापना।

* 9 Aug 1925 को 10 व्यक्तियों ने काकोरी गाँव (लखनऊ) में 8 डाउन ट्रेन को रोक रेल विभाग का खजाना लूट लिया — काकोरी कांड के नाम से मशहूर।
H.R.A ने संघर्ष के लिए नौजवानों को प्रशिक्षित करने और हथियार हेतु
Hindustan Republican Army.

* अशफ़ाकउल्ला खाँ, रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह और राजेन्द्र लाहिड़ी को फाँसी, 4 को आजीवन कारावास देकर अंडमान भेजा गया, 17 अन्य को लंबी सजाएँ दी गईं।

* चंद्रशेखर आजाद फ़रार हो गए।

Scanned by CamScanner

* उत्तर प्रदेश में विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, और जयदेव कपूर तथा पंजाब में भगत सिंह, भगवती वोहरा और सुखदेव ने आजाद के नेतृत्व में H.M.R को पुनः संगठित किया।
* 9 एवं 10 Sept. 1928 को फिरोजशाह कोटला मैदान में बैठक में संगठन का नाम बदलकर Hindustan Socialist Republican Association (H.S.R.A) कर दिया गया। → साइमन कमीशन के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान
* 30 Oct, 1928 को लाहौर में लाला लाजपतराय पर लाठी चार्ज और इनकी मौत से युवा फिर व्यक्तिगत आतंकवाद की ओर मुड़े।
* 17 Dec, 1928 को भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद और राजगुरु ने सॉंडर्स की हत्या की। → लाला लाजपतराय पर लाठी बरसाने वाला एक पुलिस अधिकारी
* 'पब्लिक सेफ्टी बिल' और 'ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल' के प्रति विरोध जताने हेतु भगत सिंह व B.K. दत्त ने सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव एसेम्बली में बम फेंका। → मामूली बम
  → पर्चा फेंका जिसपर लिखा था — बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुँचाने के लिए।
* 23 March, 1931 को भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु को फाँसी दी गई।
* (जेल के अंदर) क्रांतिकारी जेल की अमानवीय दशाओं में सुधार हेतु अनशन कर रहे थे, 64 वे दिन 13 Sept. को जतिनदास की मृत्यु हो गई।

चटगाँव विद्रोह :—

* बंगाल में युवा क्रांतिकारियों ने C.R. दास की स्वराजी कार्यों में मदद
* C.R. दास के निधन के बाद बंगाल में काँग्रेसी दो खेमों में बंटे।
* एक खेमे के नेता सुभाषचंद्र बोस व दूसरे के J.M. सेनगुप्ता।
  युगांतर गुट साथ हुआ — अनुशीलन गुट साथ हुआ
* Jan, 1924 में गोपीनाथ साहा ने टेगार्ट की हत्या का प्रयास किया परंतु अंग्रेज डे मारा गया। (टेगार्ट → बदनाम पुलिस कमिश्नर)
* अध्यादेश जारी कर क्रांतिकारी को गिरफ्तार किया गया → सुभाष चंद्र बोस भी शामिल
  साहा को फाँसी दे दी गई।

Jyoti Singh

* अनुशीलन और युगांतर गुटों के बीच झगड़े की वजह से नए क्रांतिकारी अपने नए गुट बनाने लगे, पर इनसे रिश्ता नहीं तोड़ा।
* नए 'विद्रोही संगठनों' में सबसे सक्रिय चटगाँव क्रांतिकारियों का गुट था
  नेता थे सूर्य सेन (राष्ट्रीय विद्यालय में शिक्षक)
* सूर्यसेन को (मास्टर दा) क्रांतिकारी गतिविधियों में शरीक होने के आरोप में 2 साल (1926-28) की सज़ा हुई थी। → छूटने के बाद कांग्रेस में काम
* सूर्य सेन (1929) चटगाँव ज़िला कांग्रेस कमेटी के सचिव थे।
  रवीन्द्रनाथ ठाकुर व काज़ी नजरुल इस्लाम के प्रशंसक (कविता से लगाव था)
* अनंत सिंह, गणेश घोष व लोकीनाथ बाउल, सूर्यसेन के सहयोगी थे।
* 18 April, 1930 गणेश घोष के नेतृत्व में 6 क्रांतिकारियों ने पुलिस शस्त्रागार पर कब्जा किया।
* लोकीनाथ बाउल के नेतृत्व में 10 क्रांतिकारियों ने सैनिक शस्त्रागार पर कब्जा किया
* गोला - बारूद पाने में असफल रहे।
* यह कार्रवाई 'इंडियन रिपब्लिकन आर्मी, चटगाँव शाखा' के नाम तले की गई। 65 क्रांतिकारी शामिल थे।
* क्रांतिकारी को 22 April को जलालाबाद की पहाड़ियों में सेना के कई हजार जवानों ने घेरा।
* 80 सैनिक, 12 क्रांतिकारी मारे गए।
* 16 Feb, 1933 को सूर्यसेन को गिरफ्तार कर 12 Jan, 1934 को फाँसी दे दी गई।
* सरकार ने 20 दमनकारी कानून जारी किए।
* 1933 में देशद्रोह के आरोप में जवाहरलाल नेहरू को 2 साल की सजा।
* बंगाल में बड़े पैमाने पर युवतियों की भागीदारी थी।
* प्रीतिलता वाडेदार ने पहाड़तली (चटगाँव) में रेलवे इंस्टीट्यूट पर छापा मारा और मारी गई।
* कल्पना दत्त (अब जोशी) को सूर्यसेन के साथ गिरफ्तार कर आजीवन कारावास दी गई।

Scanned by CamScanner

* Dec. 1931 में कोमिल्ला की दो स्कूली छात्रा – शांति घोष और सुनीति चौधरी ने जिलाधिकारी की गोली मार हत्या कर दी
* Feb. 1932 में बीना दास ने दीक्षांत समारोह में उपाधि ग्रहण करते समय गवर्नर पर गोली चलाई।

क्रांतिकारी दर्शन का प्रतिपादन :–

* भगत सिंह व उनके साथियों ने पहली बार क्रांतिकारियों के समक्ष एक क्रांतिकारी दर्शन रखा।
* 1925 में H.R.A का उद्देश्य – उन तमाम व्यवस्थाओं का उन्मूलन करना है, जिनके तहत एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का शोषण करता है।
* जेल से रामप्रसाद बिस्मिल ने युवकों से अपील की थी – क्रांतिकारी षड्यंत्रों में हिस्सा न लें व खुला आंदोलन चलाएं।
* भगत सिंह (जन्म 1907) ने लाहौर में सुखदेव व अन्य की मदद से कई अध्ययन केन्द्र स्थापित किए थे। → क्रांतिकारी अजीत सिंह के भतीजे
* H.S.R.A का दफ्तर आगरा जाने पर भगत सिंह ने वहाँ एक पुस्तकालय की स्थापना की।

भगत सिंह (लाहौर कोर्ट के सामने) → क्रांति की तलवार में धार वैचारिक पत्थर पर रगड़ने से ही आती है।

* द फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब (बम का दर्शन) → जनता को अपनी विचारधारा से अवगत कराने के लिए क्रांतिकारियों के बयान। इसे आजाद के अनुरोध पर भगवतीचरण वोहरा ने तैयार किया।
* व्यक्तिगत आतंकवाद से भगत सिंह का विश्वास गिरफ्तारी (1929) से पहले उठ गया व वह मार्क्सवादी हो गए थे।

विश्वास → जनता ही जनता के लिए क्रांति कर सकती है।

* भगत सिंह ने 1926 में पंजाब में "भारत नौजवान सभा" के गठन में काफी मदद की। → संस्थापक महासचिव → जनता के बीच खुलकर राजनीतिक कार्य करना

Scanned by CamScanner

(5) Jayati Singh

छात्रों के बीच कार्य करने हेतु

* भगत सिंह व सुखदेव ने "लाहौर छात्र संघ" का गठन किया।

भगत सिंह → "भारत में संघर्ष तब तक चलता रहेगा, जब तक मुट्ठी भर शोषक अपने लाभ के लिए आम जनता के श्रम का शोषण करते रहेंगे, जब तक मुट्ठी भर शोषक अपने लाभ के लिए आम जनता के श्रम का शोषण करते रहेंगे। इसका कोई खास महत्व नहीं कि शोषक अंग्रेज पूँजीपति हैं या अंग्रेज और भारतीयों का गठबंधन या पूरी तरह भारतीय है।" — 3 March 1931 के अपने अंतिम संदेश में

* 1924 में लाला लाजपतराय ने साम्प्रदायिक राजनीति अपनाया तो भगत सिंह ने उनके खिलाफ राजनीतिक - वैचारिक आंदोलन छेड़ा।

रॉबर्ट ब्राउनिंग की कविता 'द लास्ट लीडर' को पर्चे में छापा।

लाला लाजपत राय की आलोचना नहीं कि केवल चित्र छापा

* भारत नौजवान सभा के 6 नियम थे जिनमें से दो हैं — भगत सिंह ने तैयार किया

(1) ऐसी किसी भी संस्था, संगठन या पार्टी से किसी तरह का संपर्क न रखना जो सांप्रदायिकता का प्रचार करती हो।

(2) धर्म को व्यक्ति का निजी मामला मानते हुए जनता के बीच एक-दूसरे के प्रति सहनशीलता का भावना पैदा करना और इस पर दृढ़ता से काम करना।

* "मैं नास्तिक क्यूँ हूँ" भगत सिंह ने लिखा। → मौत से कुछ हफ्ते पहले

पराभव और परिवर्तन :—

* Feb 1931 में चंद्रशेखर आजाद के मारे जाने के बाद पंजाब, उत्तर प्रदेश व बिहार से आतंकवादी आंदोलन लगभग खत्म हो गया।
* सूर्य सेन के शहादत के बाद बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन खत्म हुआ।
* अधिसंख्य क्रांतिकारी मार्क्सवादी हो गए।
* बहुत से लोग गाँधीजी के नेतृत्व में कांग्रेस में शामिल हो गए।
* क्रांतिकारी आतंकवादी राजनीति ने उत्तर भारत में समाजवादी विचारधारा के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया।

Scanned by CamScanner